

# अखबार भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज

सोमवार 20 जून 2022

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

**भर्ती से पहले युवाओं का पुलिस वेरिफिकेशन होगा, तीनों सेनाओं में जोश और होश के बीच संतुलन बनाएगी 'अग्निपथ' योजना, सेना में औसत आयु 32 के बजाय 26 साल करने के लिए योजना लाई गई**

## 'वापस नहीं ली जाएगी अग्निपथ योजना'

नई दिल्ली: रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के साथ रविवार को अग्निवीर भर्ती योजना की समीक्षा के बाद एलान किया गया है कि अग्निपथ योजना किसी भी रूप में वापस नहीं होगी। तीनों सेनाओं की ओर से साझा प्रेस कॉन्फ्रेंस करके अग्निवीरों की भर्ती योजना के बारे में आन्दोलनकारियों को विस्तार से समझाने की कोशिश की गई। भारतीय सेना को इस समय युवाओं की जरूरत है, यह सुधार लंबे समय से लंबित था। आज बड़ी संख्या में जवान अपने जीवन के तीसरे दशक में हैं, इसलिए नई सेना में औसत आयु 26 साल करने के लिए यह योजना लाई गई है। अग्निपथ योजना पर साझा प्रेस कॉन्फ्रेंस की शुरूआत सैन्य मामलों के विभाग के अतिरिक्त सचिव लेफ्टिनेंट जनरल अनिल पुरी ने की। उन्होंने कहा कि योजना की घोषणा होने के बाद विभिन्न मंत्रालयों और विभागों के लिए घोषित की गई आरक्षण के संबंध में घोषणाएं पूर्व नियोजित थीं। यह घोषणाएं अग्निपथ योजना की घोषणा के बाद देश भर हुई आगजनी, हिंसा और तोड़फोड़ की प्रतिक्रिया में नहीं की गई हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय सेना की नींव में अनुशासन है, इसलिए आगजनी, तोड़फोड़ के लिए कोई जगह नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति एक प्रमाण पत्र

देगा कि वे विरोध या बर्बरता का हिस्सा नहीं थे। पुलिस वेरिफिकेशन 100% है, उसके बिना कोई भी शामिल नहीं हो सकता। कोचिंग संस्थान छात्रों को भड़का और उकसा रहे हैं लेकिन उन्हें हिंसा और प्रदर्शन में हिस्सा नहीं लेना चाहिए। लेफ्टिनेंट जनरल अनिल पुरी ने कहा कि भारतीय सेना को इस समय युवाओं की जरूरत है, यह सुधार 1989 से लंबित था। इस योजना के तहत हम सेना में मौजूदा सैनिकों के अनुभव के साथ युवावस्था को लाना चाहते हैं। आज सेना में जवानों की औसत आयु लगभग 32 वर्ष है, लेकिन आने वाले 6-7 वर्षों में यह और कम होकर 26 वर्ष हो जाएगी। देश के युवाओं की क्षमता का इस्तेमाल करने के लिए उन्हें भविष्य का सैनिक बनाने की आवश्यकता है। इस साल 40 हजार से शुरू होने वाली भर्ती से निकट भविष्य में सेनाओं में 'अग्निवीरों' की संख्या 1.25 लाख हो जाएगी। बुनियादी क्षमता का निर्माण करने के लिए हमने योजना का विशेषण करने के लिए 46 हजार से शुरूआत की है। अगले 4-5 वर्षों में प्रतिवर्ष 50 से 60 हजार और बाद में बढ़कर 90 हजार से 1 लाख हो जाएगी। सैन्य मामलों के विभाग के अतिरिक्त सचिव ने कहा कि हम इस सुधार के साथ सेना में युवावस्था और



अनुभव को साथ लाना चाहते हैं। सेना में अनुशासनहीनता की कोई जगह नहीं है, इसलिए अग्निवीरों को भी कुशल प्रशिक्षण के साथ-साथ मानसिक, शारीरिक और अनुशासन में रहने की भी ट्रेनिंग दी जाएगी। अग्निवीरों को मिलने वाले भत्तों के बारे में कहा कि 'अग्निवीर' को सियाचिन और अन्य क्षेत्रों जैसे क्षेत्रों में वही भत्ता मिलेगा जो वर्तमान में सेवारत नियमित सैनिकों को मिलता है। सेवा शर्तों में उनके साथ कोई भेदभाव नहीं होगा दिश की सेवा में अपना जीवन कुर्बान करने वाले 'अग्निवीर' को एक करोड़ रुपये का मुआवजा मिलेगा। लेफ्टिनेंट जनरल बंशी पुनप्या ने कहा कि सेना में अग्निवीरों की भर्ती के लिए 1 जुलाई

### एफआईआर हुई तो नहीं मिलेगा मौका

लेफ्टिनेंट जनरल पुरी ने कहा कि अग्निवीर बनने के लिए आवेदन करने वाला प्रत्येक उम्मीदवार एक प्रमाण-पत्र देगा कि वह विरोध, आगजनी, तोड़फोड़ और हिंसा का हिस्सा नहीं था। पुलिस सत्यापन 100 प्रतिशत है, उसके बिना कोई भी शामिल नहीं हो सकता है। यदि किसी उम्मीदवार के खिलाफ कोई प्राथमिकी दर्ज की जाती है तो वे भारतीय सशस्त्र बलों में शामिल नहीं हो सकते। उन्हें नामांकन फॉर्म के हिस्से के रूप में यह लिखने के लिए कहा जाएगा कि वे आगजनी का हिस्सा नहीं थे, उनका पुलिस सत्यापन किया जाएगा। फिर देनी होगी मेडिकल परीक्षा: सेना ने साफ किया है कि दो साल पहले नियमित सेना में भर्ती के लिए मेडिकल परीक्षा पास करने वाले अभ्यर्थियों को दोबारा मेडिकल परीक्षा से गुजरना पड़ेगा।

को नोटिफिकेशन आएगा। नौसेना के वाइस एडमिरल दिनेश त्रिपाठी के अनुसार अगले दो-तीन दिनों में 25 जून तक हमारा विज्ञान मंत्रालय तक पहुंच जाएगा। 21 नवंबर को नेवी के अग्निवीर का पहला बैच आईएन एसमिलका ओडिशा में रिपोर्ट करना शुरू कर देगा। हम महिलाओं को भी अग्निवीर बना रहे हैं।

### गाइडलाइन: चार साल पूरे किए बिना जॉब नहीं छोड़ सकते, साल में 30 दिन की छुट्टी मिलेगी

नई दिल्ली: इंडियन एयरफोर्स ने अग्निवीरों की भर्ती की गाइडलाइन जारी कर दी है। तीनों सेनाओं में सबसे पहले एयरफोर्स ने ही गाइडलाइन जारी की है। इसके अनुसार अग्निवीरों को अपनी चार साल की नौकरी पूरी करनी होगी। इससे पहले वह फोर्स नहीं छोड़ सकते। ऐसा करने के लिए उन्हें अधिकारी की सहमति लेनी होगी। सम्मान और छुट्टी दोनों मिलेंगे: अग्निवीरों की भर्ती को लेकर सबसे बड़ा पंच छुट्टी और अवार्ड का था। एयरफोर्स ने साफ किया है कि अग्निवीर सभी सैन्य सम्मान और पुरस्कार के हकदार होंगे। इन्हें साल में तीस दिन की छुट्टी भी दी जाएगी। इसके अलावा वीमार होने पर डॉक्टर की सलाह पर लिए उन्हे अधिकारी की सहमति लेनी होगी। एक करोड़ रुपये का मुआवजा सैन्य मामलों के विभाग के अतिरिक्त सचिव लेफ्टिनेंट जनरल अरुण पुरी ने कहा कि देश की सेवा में बलिदान देने वाले अग्निवीरों को एक करोड़ रुपये का मुआवजा मिलेगा। सुविधाएं नियमित सैनिकों जैसी मिलेंगी: अग्निवीरों को सियाचिन और अन्य क्षेत्रों जैसे क्षेत्रों में वही भत्ता और सुविधाएं मिलेंगी जो वर्तमान में नियमित सैनिकों पर लागू होती है।

### थलसेना में 1 जुलाई से भर्ती प्रक्रिया शुरू होगी

थलसेना में 1 जुलाई से भर्ती प्रक्रिया शुरू होगी। विरोध प्रदर्शन के बीच सेना ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में तीनों सेनाओं भर्ती प्रक्रिया के लिए तारीखों का एलान कर दिया है। थलसेना ने कहा है कि उसकी भर्ती प्रक्रिया 1 जुलाई से शुरू हो जाएगी। 24 जून को वायुसेना में पहले बैच के लिए प्रक्रिया शुरू: एयर मार्शल एसके झा ने कहा कि भारतीय वायुसेना में 24 जून से अग्निवीरों के पहले बैच को लेने की प्रक्रिया शुरू हो जाएगी। यह एक ऑनलाइन सिस्टम है। उसी के तहत उसपर रजिस्ट्रेशन शुरू होगा। एक महीने बाद 24 जुलाई से फेज-1 ऑनलाइन परीक्षाएं शुरू हो जाएंगी। 25 जून को नौसेना जारी करेगी नोटिफिकेशन नौसेना के वाइस एडमिरल डी.के. त्रिपाठी ने कहा कि हमने अपनी भर्ती प्रक्रिया शुरू कर दी है। 25 जून तक हमारी एडवर्टाइजमेंट सूचना और प्रसारण मंत्रालय में पहुंच जाएगा। एक महीने के अंदर भर्ती प्रक्रिया शुरू हो जाएगी। 21 नवंबर को हमारे पहले अग्निवीर हमारे ट्रेनिंग संस्थान में रिपोर्ट करेंगे। निकट भविष्य में 1.25 लाख हो जाएगी अग्निवीरों की संख्या लेफ्टिनेंट जनरल पुरी ने कहा कि निकट भविष्य में 'अग्निवीर' की संख्या 1.25 लाख हो जाएगी और 46,000 पर नहीं रहेगी जो कि वर्तमान आंकड़ा है।

## प्रगति मैदान एकीकृत ट्रांजिट कॉरिडोर परियोजना राष्ट्र को समर्पित



नई दिल्ली: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को प्रगति मैदान एकीकृत ट्रांजिट कॉरिडोर परियोजना की मुख्य सुरंग और पांच अंडरपास राष्ट्र को समर्पित किए। यह एकीकृत ट्रांजिट कॉरिडोर परियोजना प्रगति मैदान पुनर्विकास



परियोजना का अभिनंदन अंग है। पूरी तरह से केंद्र सरकार द्वारा वित्त पोषित इस परियोजना को 920 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से तैयार किया गया है। इसका उद्देश्य प्रगति मैदान में विकसित किए जा रहे नए विश्वस्तरीय प्रदर्शनी और कन्वेंशन सेंटर तक परेशानी मुक्त और सुगम पहुंच प्रदान करना है, जिससे प्रगति मैदान में होने वाले कार्यक्रमों में प्रदर्शकों और आगंतुकों की आसानी से भागीदारी हो सके। मुख्य सुरंग प्रगति मैदान से गुजरने वाली पुराना

## प्रधानमंत्री ने कचरा उठा कर दिया स्वच्छता का संदेश



नई दिल्ली: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को दिल्ली के प्रगति मैदान में एकीकृत ट्रांजिट कॉरिडोर परियोजना का उद्घाटन करने के साथ ही देशवासियों को स्वच्छता का संदेश दिया। परियोजना के तहत निर्मित सुरंग का निरीक्षण करने के दौरान कुछ कचरा देखा तो वे खुद को रोक न सके और उसे उठाना शुरू कर दिया। दिल्ली स्थित प्रगति मैदान के समीप बने एकीकृत ट्रांजिट कॉरिडोर परियोजना की मुख्य सुरंग के साथ बने पांच अंडरपास का प्रधानमंत्री ने आज उद्घाटन किया। उद्घाटन के बाद वह सुरंग का निरीक्षण कर रहे थे और वहां बनी कलाकृतियों को देख रहे थे। इसी दौरान उनकी

नजर सुरंग में कुछ कचरे पर पड़ी, उन्होंने झुक कर कचरे को उठाना शुरू कर दिया। इसके बाद सोशल मीडिया पर प्रधानमंत्री का कचरा उठाने वाला वीडियो वायरल हो गया है। उल्लेखनीय है कि प्रगति मैदान एकीकृत ट्रांजिट कॉरिडोर परियोजना की मुख्य सुरंग समेत पांच अंडरपास को देश को समर्पित किया। आज से यह आम जनता के लिए खोल दिया गया है। इससे प्रगति मैदान और आसपास की सभी सड़कों पर आवागमन सुगम होगा।

## आजमगढ़ को आर्यमगढ़ बनाने का मौका है: योगी

आजमगढ़: आजमगढ़ लोकसभा उपचुनाव में रविवार को पहली बार सीएम योगी प्रचार के लिए पहुंचे। योगी ने यहां 2 रैलियां की। योगी ने कहा कि- आजमगढ़ को समाजवादी सरकार ने आतंकवाद बना दिया था। अब आपके पास आर्यमगढ़ बनाने की प्रक्रिया के साथ जुड़ने का अवसर आया है। चूकिएगा मत! योगी ने कहा कि धोखा देना समाजवादियों की पुरानी आदत है। बाता दें, आजमगढ़ में निरहुआ भाजपा प्रत्याशी हैं। मुकाबला बसपा के गुड्डू जमाली



और सपा के धर्मनंदा यादव से है। हम विकास, वो वंशवाद की बात करते हैं: योगी ने कहा कि आजमगढ़ को आतंकवाद बनने से बचा लीजिए। इस बार निरहुआ को सांसद बना दीजिए।

### पैसेंजर बोले- पटना से उड़ान भरते ही आग लगी, 22 मिनट तक 185 यात्री हवा में अटके रहे

## हादसा टला: पक्षी टकराने से फ्लाइट का इंजन जला

पटना: पटना एयरपोर्ट पर रविवार को स्पेस जेट की फ्लाइट एसजी-723 के इंजन में आग लग गई। विमान पटना से दिल्ली जा रहा था। आग लगने के बाद फ्लाइट की सुरक्षित लैंडिंग कराई गई है। आग लगने से इंजन से धुआं निकलने लगा। पटना एयरपोर्ट के डायरेक्टर अंचल प्रकाश ने रनवे पर टेक ऑफ के समय ही लेफ्ट इंजन में पक्षी घुस गया। इसकी वजह चिंगारी निकलने लगी। इसे एटीसी ने देख लिया और पायलट को भी एहसास हो गया था। एटीसी तुरंत पायलट को लैंडिंग के लिए कहा।



अगर देर होती तो बड़ा हादसा हो सकता था। वहीं 18 नंबर सीट पर बैठी एक युवती शिबु सुमन ने कहा कि टेक ऑफ के वक्त की इंजन से अजीब सी आवाज आ

की प्रॉब्लम थी। 22 मिनट हवा में रहा विमान: विमान ने रविवार दोपहर 12 बजकर 3 मिनट पर टेक ऑफ किया था। उड़ान भरते समय ही तेज धमाके के साथ लेफ्ट विंग में आग लग गई। 22 मिनट (12:25 बजे) बाद पायलट ने सूझबूझ से विमान को एयरपोर्ट पर लैंड करा लिया। कोई भी यात्री घायल नहीं: फ्लाइट में 185 यात्री सवार थे। फ्लाइट को सुरक्षित लैंड करा लिया गया है। फिलहाल यात्रियों को बाहर निकाल लिया गया है।

### दिल्ली से प्लानिंग: स्टिंग में खुलासा, कोचिंग वाले युवाओं को वीडियो दिखाकर हिंसा के लिए भड़काते हैं

## बिहार को 21 तक जलाने की साजिश

पटना केंद्र सरकार की अग्निपथ योजना की आग में पूरा बिहार बीते 4 दिन से झुलस रहा है। इस दौरान एक पैसेंजर की मौत हो गई है तो 15 ट्रेनों को फूंक दिया गया है। बिना नेता का आंदोलन बिहार से शुरू होकर पूरे देश में फैल गया। ऐसा हुआ कैसे? कौन इस आग को हवा दे रहा है? किसके इशारे पर हजारों युवा आगजनी, मारपीट और लूटपाट पर उतारू हो गए हैं? और ये हिंसात्मक प्रदर्शन कब तक चलेगा? पड़ताल में पता चला कि इस साजिश में कई कोचिंग संचालक भी शामिल हैं।



अपने नेटवर्क के सहारे स्थानीय कोचिंग संचालकों से संपर्क करते हैं और उन्हें लड़कों को तैयार करने का आदेश देते हैं। इसके बाद संचालक युवाओं की भावनाओं को भड़काते हैं। इसके लिए बाकायदा वीडियो का इस्तेमाल भी किया जाता है।

10 स्टूडेंट्स देने की बात पर खुले संचालक: शाम 5 बजे पटना के बाजार समिति स्थित एक स्कूल में चल रहे प्रशिक्षण केंद्र पहुंची। बारिश धीरे-धीरे तेज होने लगी थी। इस दौरान भी कुछ लड़कियां हाई जंप की प्रैक्टिस कर रही थीं, तो लगभग 25-30 लड़के अलग से खड़े थे। तभी वहां केंद्र के संचालक पहुंचे। उनके पहुंचते ही सभी लड़के पैर छूने लगे। शुरू में वो हमें कुछ भी बताने से बच रहे थे। जब हमने उन्हें बताया कि हम उन्हें 10 स्टूडेंट्स प्रशिक्षण के लिए दे सकते हैं, तब उन्होंने एक-एक कर पूरी कक्षानी बताई। साथ ही उन्होंने स्कूल की जमीन पर अपना प्रशिक्षण केंद्र खोलने की भी कहानी सुनाई।

## जम्मू-कश्मीर में 3 आतंकी ढेर

जम्मू-कश्मीर: जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा और कुलगाम में सुरक्षाबलों ने रविवार को दो एनकाउंटर में 3 आतंकीयों को मार गिराया। कुपवाड़ा एनकाउंटर में दो आतंकी मारे गए जिनमें एक पाकिस्तानी था और आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा का सदस्य था। पुलिस महानिरीक्षक विजय कुमार ने बताया कि अभी सुरक्षाबलों ने इलाके में 2-3 आतंकीयों को घेर रखा है। आतंकी शोकात से मिला इनपुट: सुरक्षाबलों ने कुपवाड़ा ऑपरेशन आतंकी शोकात अहमद शेख से मिली जानकारी के बाद शुरू किया है, जिसे हाल ही में सेना ने गिरफ्तार



किया था। कुपवाड़ा के अलावा कुलगाम के दमहाल हांजी पोरा इलाके में भी सुरक्षाबलों और आतंकीयों के बीच मुठभेड़ शुरू हो गई है। यहां भी एक आतंकी मारा गया है। शुरुवार को दक्षिण कश्मीर के पुलवामा जिले के पंगोर इलाके में रहस्यमय परिस्थितियों में एक पुलिस सब इंसपेक्टर का गोलीयों से छलनी शव मिला था।



## सिटी आस-पास संदेश

## खबर संक्षेप

प्रधान ने दलित को दौड़ा दौड़ा कर पीटा, एससी एस टी एक्ट में मुकदमा दर्ज

**मऊआइमा।** मामूली बात को लेकर प्रधान ने दलित को दौड़ा दौड़ा कर पीटा एक अन्य घटना में एक को मारने पीटने पर मुकदमा दर्ज किया गया है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम खोतेमऊ के ग्राम प्रधान पर भारत लाल सरोज पुत्र भोला पासी ने आरोप लगाया है कि वह ट्रैक्टर लेकर जा रहा था तभी ग्राम प्रधान और उनके साथियों ने मिल कर उसे दौड़ा दौड़ा कर मारे पीटे और जाति सूचक गालियां दी तथा जान से मारने की धमकी भी दिए। भारत लाल ने मऊआइमा थाने में ग्राम प्रधान अमजद हुसैन पुत्र मजहर हुसैन के खिलाफ एससी एसटी एक्ट में मुकदमा दर्ज करा दिया है। उधर ग्राम कल्याणपुर निवासी ओमप्रकाश यादव पुत्र उमेश चन्द्र का आरोप है कि वह हंडैप पर पानी भरने के लिये खड़ा था तभी उनके विपक्षी उसे मारे पीटे तथा गुलांग में बुरी तरह मार कर जख्मी कर दिए। ओमप्रकाश ने मऊआइमा थाने में तहरीर दे कर कपिल यादव, राधेवन्द यादव के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

## तूफान से गिरी दीवार मां की मौत बेटा घायल

अखंड भारत संदेश

**हड़िया।** प्रयागराज के थाना उतरांव क्षेत्र के जलालपुर कस्बा गांव में बीते शाम तेज तूफान में दीवार गिर गई। जिसकी चपेट में आने से वृद्ध महिला की इलाज के लिए ले जाते समय रास्ते में मौत हो गई। वहीं बेटा राजेश कुमार भी दीवार के पास में था। तेज तूफान आने से दीवार गिर गई। दीवार की चपेट में मां बेटे दोनों आ गए।

**अस्पताल ले जाते समय तोड़ा दम**  
दीवार गिरने की तेज आवाज सुन पास पड़ोस के लोग भागे। दीवार में दबे मां बेटे को बाहर निकाला गया। मां की हालत नाजुक देख परिवारियों ने इलाज के लिए अस्पताल लेकर भागे। इलाज के लिये



जलालपुर में हुए हादसे के बाद गमगीन परिजन व गांव के लोग

ले जाते समय रास्ते में ही रामपति की मौत हो गई। युवक राजेश कुमार गंभीर रूप से घायल हो गया। मौत की सूचना पर परिवारियों में कोहराम मचा हुआ है।

**मृतका के दो बेटे व एक बेटे**  
मृतका के दो बेटे एक बेटे हैं। एक बेटा राजकुमार जो सीआरपीएफ में नियुक्त है तथा एक बेटे जिसका विवाह हो चुका है। सूचना पर पहुंचे थानाध्यक्ष श्रवण कुमार ने मय फोर्स के साथ शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

## कार सवार लोगों ने बाइक सवार को पीट 22 हजार छीने

**धूरपुर।** धूरपुर रेलवे फाटक के पास बाइक सवार को शनिवार की रात कार सवार आधा दर्जन लोगों ने मार पीटकर बीस हजार नकदी छीन कर भाग निकले। मामले की शिकायत पीड़ित ने धूरपुर पुलिस से की है। धूरपुर थाना क्षेत्र के भीटा गांव निवासी राजू प्रजापति बालू का व्यवसाय करता है। शनिवार की रात वह क्षेत्र के शाहक से बालू के बकाए बाइस हजार रुपये लेकर अपनी बाइक से घर लौट रहा था। अभी वह धूरपुर रेलवे फाटक के पास पहुंचा था कि कार सवार आधा दर्जन लोगों ने उसकी बाइक रोक ली और मारपीट करते हुए बाइस हजार रुपये छीनकर भाग निकले। पीड़ित ने गांव के तीन लोगों को नामजद व तीन अज्ञात के खिलाफ रुपये लूटने की शिकायत की है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

## आशा कार्यकर्ता भी होंगी आयुष्मान भव

## आशा कार्यकर्ताओं व परिवार को पांच लाख रुपए तक का इलाज मुफ्त

अखंड भारत संदेश

**प्रयागराज।** अब आशा कार्यकर्ताओं को भी आयुष्मान भारत योजना का लाभ मिलेगा। इससे उनके परिवार को वार्षिक पांच लाख रुपये तक का प्रो इलाज मिल सकेगा। इसके लिए तैयारी चल रही है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. नानक सरन ने बताया कि जनपद की ग्रामीण आशा, शहरी आशा और आशा सगिनी भी परिवार सहित आयुष्मान योजना से जुड़ जाएंगी इसके लिए सूची तैयार कर शासन को भेजी जाएगी। प्रदेश स्तर पर डेटा संकलन के बाद लाभार्थी परिवारों को मुख्यमंत्री जन आरोग्य अभियान से जोड़ने के संबंध में निर्धारित प्रक्रिया के बाद शासनादेश जारी किया जाएगा।

**प्रयागराज में 4161 आशा कार्यकर्ताओं को मिलेगा लाभ**  
एनएचएम के जिला कार्यक्रम प्रबंधक विनोद सिंह ने बताया कि जिले की 4161 ग्रामीण आशा, शहरी 313 आशा, और 174 आशा सगिनी के आयुष्मान भारत के कार्ड बनाये जायेंगे इससे आशाओं को भी



बहुत प्रोत्साहन मिलेगा आशा स्वास्थ्य विभाग की आखिरी इकाई है। आशा के जरिये ही योजना का लाभ जन तक पहुंचता है। जिला कार्यक्रम प्रबन्धक ने बताया कि योजना से जुड़ जाने के बाद पात्र लाभार्थी को किसी भी बीमारी का इलाज भत्ता होकर करवाने पर सम्बंधित अस्पतालों में पांच लाख रुपये प्रति लाभार्थी परिवार का निःशुल्क इलाज मिल सकेगा। आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन

आरोग्य योजना के तहत मातृ स्वास्थ्य और सी-सेक्शन या उच्च जोखिम प्रसव की सुविधा, नवजात और बच्चों के स्वास्थ्य, कैसर, टीवी, कीमोथेरेपी, रेडिएशन थेरेपी, हार्ट बाईपास सर्जरी, न्यूरो सर्जरी, आंखों की सर्जरी, दिल की बीमारी, किडनी, लीवर, कोरोनरी बायपास, चूटना प्रत्यारोपण, स्टंट डालना, आंख, नाक, कान और गले से सम्बंधित बीमारियों का निःशुल्क इलाज प्रमुख तौर पर शामिल है।

## चोरों ने खंगाला घर, एक लाख के गहने व कैश किया पार

अखंड भारत संदेश

**झुंसी।** झुंसी थाना अंतर्गत सराय तकी मोहल्ले में चोरों ने एक घर का ताला तोड़कर लाखों का सामान व नगदी पार कर दिए। मिली जानकारी के अनुसार शादी समारोह में गांव गए परिवार के लोगों ने जब लौटकर अपने घर आए तो देखा चोरों ने ताला तोड़कर कीमती सामान व कुछ रुपए लेकर रफूचककर हो गए थे। बताते चलें कि सराय तकी मोहल्ले में सभाजीत तिवारी अपने परिवार के साथ रहते थे गांव में परिवार के ही लोगों के यहां शादी समारोह में शामिल होने के लिए गए हुए थे वहां से जब लौट कर आए तो घर का नजारा कुछ और ही था सभी कमरों के चोरों ने ताले तोड़कर लूटपाट की थी कमरे के अंदर रखा हुआ बड़ा बाक्स व अलमारी के अंदर रखे गाने को भी चोरों ने तोड़कर उठा ले गए थे। बातचीत के दौरान सभाजीत तिवारी ने बताया कि पुलिस को 112 नंबर व थाने पर सूचित कर दिया गया है सूचना के पश्चात थाने के दरोगा व 112 नंबर की



चोरी के बाद बिखरा पड़ा कमरे में सामान

पुलिस मौके पर पहुंचकर जांच पड़ताल करती रही। जब झुंसी थाने के इंजांच से बात की गई तो उन्होंने बताया कि सराय तकी के एक सभाजीत तिवारी के घर में चोरी हुई है जिसको लेकर जांच पड़ताल की जा रही है तथा पास के ही घर में एक सीसीटीवी कैमरा लगा हुआ है जांच पड़ताल की दृष्टि से जांच की जाएगी और जल्द से जल्द चोरों को पकड़ कर कड़ी से कड़ी सजा देने का काम किया जाएगा।



घटना के बाद पुलिस कर रही जांच पड़ताल

## पुलिस वसूली में मस्त क्षेत्र में हो रही चोरी छिनेती

**झुंसी।** स्थानीय थाना क्षेत्र में एक ही दिन में हुई चोरी व छिनेती की घटना पुलिस की गश्त प्रणाली पर प्रश्न चिन्ह खड़ा कर रही है। चोरो ने एक सूने मकान का ताला तोड़ लाखों के जेवरात व नगदी लेकर फरार हो गए। वहीं सुबह कोचिंग पढ़ने जा रहे छात्र का बाइक सवार बदमाशो ने मोबाइल छीन लिया। क्षेत्र में हुई वारदात से आक्रोशित लोगों का कहना है कि पुलिस गस्त के बजाय रात भर मिट्टी की गाड़ियों से वसूली में व्यस्त रहती है शिकायत के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं होती। बताया जाता है कि सरायतकी निवासी सभाजीत तिवारी अपने परिवार के साथ एक शादी समारोह में शामिल होने गांव गए हुए थे रविवार की सुबह आये तो घर का ताला टूटा था कमरों के अंदर रखा सारा सामान बिखरा पड़ा था अलमारी बरसे का भी ताला टूटा था जिसमें रखे लाखों के जेवरात और नकदी गायब थे वहीं सौनेती गांव का छात्र सत्यम सिंह सुबह कोचिंग पढ़ने न्याय नगर जा रहा था। पूरे सूरदास में वह अपने साथी का इंतजार करने लगा तभी बाइक सवार दो बदमाश उसका मोबाइल छीन फरार हो गया। घटना से जहां लोगो में आक्रोश है वह भय भी बना है।

## तालाब पर हुए अतिक्रमण पर एसपी ने चौबीस घंटे में कार्रवाई का कार्यकर्ताओं को दिया भरोसा

अखंड भारत संदेश

सरदार पटेल इंटर कॉलेज की छात्राओं ने प्रदेश में लहराया परचम

## इंटर की जिया मिश्रा ने प्रदेश में चौथा तो हाई स्कूल की आस्था तिवारी ने हासिल किया दसवां स्थान

**रत्नौरा।** माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश (यूपी बोर्ड) के रिजल्ट में कोरांव तहसील क्षेत्र के सरदार पटेल इंटर कॉलेज सिकरो कोरांव की छात्राओं ने प्रदेश में कॉलेज का परचम लहराते हुए क्षेत्र का नाम रोशन किया है। सरदार पटेल इंटर कॉलेज में पढ़ने वाली छात्रा जिया मिश्रा पुत्री रविंद्र प्रसाद मिश्र निवासी सारीपुर गोपीगंज भदोही हाल मुकाम शास्त्री नगर कोरांव ने इंटरमीडिएट की परीक्षा में 94% अंक हासिल कर प्रदेश में चौथा स्थान हासिल किया है। वहीं हाई स्कूल की छात्रा आस्था तिवारी पुत्री कोशलेश चंद्र तिवारी निवासी नगर पंचायत कोरांव ने 96% अंक हासिल कर प्रदेश में दसवां स्थान प्राप्त किया है। इंटरमीडिएट में प्रदेश में चौथा स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा जिया मिश्रा ने बताया कि आगे इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर आईएस बनना चाहती हूं जबकि हाई स्कूल में दसवां स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा आस्था तिवारी ने कहा की ग्रेजुएशन की पढ़ाई कर आईएस बनना चाहती हूं। दोनों छात्राओं ने अपनी सफलता का श्रेय माता-पिता एवं गुरुजनों को दिया है। इंटरमीडिएट में चौथा स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा जिया मिश्रा क्षेत्र के ज्ञान गंगा इंस्टीट्यूट से कोचिंग भी पढ़ा करती थी, जबकि हाई स्कूल में दसवां स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा आस्था तिवारी बिना कोचिंग किए ही प्रदेश में परचम लहराया है। इंटरमीडिएट की टॉपर छात्रा जिया मिश्रा के पिता रविंद्र प्रसाद मिश्र साधारण चिकित्सक हैं। माता संगीता मिश्रा कोरांव के जोकराई गांव में आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री पद पर कार्यरत हैं। जिया दो बहनो एवं एक भाई में सबसे छोटी हैं। बड़ी बहन शिवानी मिश्रा कोरांव तहसील में निर्वाचन विभाग में कंप्यूटर ऑपरेटर है, जबकि भाई सत्यम मिश्रा वर्नमेंट आईटीआई कॉलेज मिजापुर से आईटीआई दूसरे वर्ष का छात्र है। हाई स्कूल की टॉपर छात्रा आस्था तिवारी के पिता कोशलेश चंद्र तिवारी सरत में रहकर प्राइवेट नौकरी करते हैं। माता मीना देवी का जन्म आस्था ढाई वर्ष की थी तभी मिशन हो गया था। इनका पालन-पोषण बड़ी माता शिवानी आवती देवी एवं दादा सुरेश चंद्र तिवारी ने किया। इसी प्रकार 2020 में हाई स्कूल में प्रदेश में दसवां स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा अल्का सिंह पुत्री सतीश कुमार सिंह निवासी पूरानुग्रह इंटरमीडिएट की परीक्षा में जनपद में पांचवां स्थान प्राप्त कर क्षेत्र का मान बढ़ाया है। ज्ञातव्य हो कि एक दशक से क्षेत्र का सरदार पटेल इंटर कॉलेज सिकरो प्रत्येक वर्ष यूपी बोर्ड की परीक्षाओं में टॉप टेन की श्रेणी में आ रहा है। यहां के बच्चे प्रदेश में परचम लहरा रहे हैं। जिससे यह कालेज कुछ सुविधियों में चल रहा है।

**प्रधानाचार्य ने अभिभावकों के छात्राओं का किया स्वागत** : सरदार पटेल इंटर कॉलेज सिकरो कोरांव के प्रधानाचार्य डॉ अशोक कुमार सिंह ने इंटरमीडिएट में प्रदेश में चौथा स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा जिया मिश्रा व हाई स्कूल में प्रदेश में दसवां स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा आस्था तिवारी को विद्यालय प्रांगण में माला पहनाकर स्वागत करते हुए मुंह मीठा कराया और उन्हें सदैव आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी। दोनों छात्राओं की सफलता से आह्लादित प्रधानाचार्य ने आगे और कड़ी मेहनत कर सफलता अर्जित करने का आशीर्वाद दिया। इस दौरान छात्राओं के माता-पिता भी मौजूद रहे। विद्यालय के शिक्षकों ने भी छात्राओं की सफलता पर खुशी का झंझार करते हुए बधाई दी।

अखंड भारत संदेश

**धूरपुर।** रविवार को थाना प्रभारी धूरपुर आईपीएस चिराग जैन की अनुवाई में धूरपुर क्षेत्र के बगबना और चिल्ली गांव में चौपाल आयोजित की गई। चौपाल में लोगों ने खुलकर अपनी समस्याएं रखीं, जिसमें अधिकारों का निस्तारण करा दिया गया। जिनका निराकरण नहीं हो सका उन्हें संबंधित विभाग के अधिकारियों से फोन से बातचीत कर निस्तारण की तिथि तय की गई। बगबना गांव में आयोजित चौपाल में कुल सात समस्याएं आई जिसमें अधिकतर रास्ते के विवाद और राजस्व से जुड़े मामले थे। पुलिस ने संबंधित लोगों से बातचीत कर पांच समस्याओं का मौके पर ही निस्तारण करा दिया गया। एक अन्य पुराने मामले में गांव के तालाब पर अवैध रूप से कब्जा करने वाले अद्वारह लोगों के

चौपाल में कई शिकायतों का किया निस्तारण



धूरपुर में आयोजित चौपाल में समस्या सुनते थाना प्रभारी आई पी एस चिराग जैन

प्रधान बृजमोहन कुशवाहा राम सजीवन आदि लोग उपस्थित रहे। इसी प्रकार चिल्ली गांव में आयोजित चौपाल में कुल दस लोगों ने अपनी समस्याएं रखी जिसके चार का मौके पर ही निस्तारण करा दिया गया। एक अन्य पुराने मामले में गांव के तालाब पर अवैध रूप से कब्जा करने वाले अद्वारह लोगों के

में ग्राम प्रधान राजेश कुमार पटेल,

राधेश्याम कुशवाहा, राजू कुशवाहा, राजमणि, निर्मला प्रताप नारायण,तिलकराज, नन्दलाल, अमर सिंह, दशरथ लाल पटेल आदि लोग उपस्थित रहे।

**जमीन पर बैठकर अधिकारी ने सुनी फरियाद**

चिल्ली गांव में आयोजित चौपाल में अधिकारियों को बैठने के लिए कुर्सी लगाई गई थी जबकि गांव के लोगों के बैठने के लिए सामने दरी बिछाई गई थी। आईपीएस चिरागजैन के पहुंचने पर लोगों ने उन्हें कुर्सी पर बैठने को कहा लेकिन वे कुर्सी छोड़कर लोगों के साथ दरी पर ही बैठे। उनकी साथ गए अधिकारी भी लोगों के साथ जमीन पर ही बैठे।अधिकारियों के बर्ताव ने लोगों का दिल जीत लिया।

## कड़ी मेहनत एवं सच्ची लगन ही सफलता का असली मूलमंत्र : अनिल विश्वकर्मा

अखंड भारत संदेश

**जसरा।** उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद (यूपी बोर्ड) के परिणाम घोषित हो चुका है जिसके उपरान्त ही प्रदेश सहित जनपद, क्षेत्र में अथर्वल अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को बधाइयों का सिलसिला जारी है। इसी क्रम में क्षेत्र में स्थित कम्ला स्मारक इंटर कॉलेज में भी शत प्रतिशत प्रथम श्रेणी से छात्र एवम छात्राएं अंक अर्जित किये हैं। विद्यालय के अधिकांश छात्र 80प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर क्षेत्र एवम जनपद के यश को बढ़ा रहे हैं। इस अवसर पर विद्यालय के प्रबंधक अनिल कुमार विश्वकर्मा ने बताया कि विगत कई वर्षों की भांति इस वर्ष का परीक्षा परिणाम भी पूर्व की तरह शानदार एवम ऐतिहासिक रहा है। इसका श्रेय पूर्ण रूप से विद्यार्थियों की मेहनत एवम अध्यापकों के कुशल

मार्गदर्शन को जाता है।आगे उन्होंने यह भी बताया विगत दो वर्षों से कोरोना संक्रमण के कारण विभिन्न चुनौतियों अवरुध आयी किन्तु विद्यालय के कुशल शिक्षकों एवम विद्यार्थियों ने उन चुनौतियों को भी मात देते हुए संदेव से श्रेष्ठ एवम उच्च कार्य किये हैं जिसका उन्हें गर्व है। आगे प्रबंधक श्री विश्वकर्मा ने यह भी बोले कि कड़ी मेहनत, आत्मविश्वास, सच्ची लगन, धैर्य के साथ यदि कोई भी कार्य किया जाये तो बड़ी बड़ी मुश्किलों को पारस करके सफलता के नये आयाम रचे जा सकते हैं। विद्यालय के प्रबंधक अनिल कुमार विश्वकर्मा ने आनंदराज पटेल 82.6%, सुधाशु पटेल 82.2%,स्नेहा द्विवेदी 82% सिम्मी सिंह 81.2%,रंजेश प्रसाद मिश्र 80%,अनुपम शुक्ला 79.4%,आरुषि शुक्ला 78.8%, साक्षी पाण्डेय

78.6%,शिवम यादव 78%,सुजाता प्रजापति 77.8 प्रतिशत अंक हासिल कर-के विद्यालय के टॉप की सूची में शामिल हुए। इसी प्रकार हाईस्कूल ने उत्कर्ष प्रतेल 90.33%,उदित यादव 89.6%,सुनील कुमार पाल 88.3%,उदित नारायण 87.6%, मुनेश चन्द्र पाल 86.83%,आराध्या शर्मा 86.83%,हेमा गौतम 86.83%,देव सिंह पटेल 86.6%,समीर गौतम 86.6%,राजी पटेल 86.6%,कशिश पथिक 86.3%,अंचल साहू 86.16%,श्वेता प्रजापति 86%,अर्पित सिंह 85.83%,मुस्कान धुरिया 85.83% ने हाईस्कूल की परीक्षा में टॉप टेन की सूची में सम्मिलित हुई हैं। उक्त संस्थान की प्रधानाचार्या अलका विश्वकर्मा ने सभी विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ कुछ नेक एवम बड़ा करने के लिए आशीर्चन देते हुए प्रोत्साहित की।

## जिले में छठवां स्थान पाकर पुरुषोत्तम सिंह इंटर कालेज का बढ़ाया मान

**धूरपुर।** क्षेत्र के पुरुषोत्तम सिंह इंटर कॉलेज की इंटर की एक छात्रा संस्कृति सिंह ने जनपद में छठवां स्थान प्राप्त कर जहां कालेज का मान बढ़ाया वहीं ग्रामीण छात्रों के लिए अनुकरणीय बन गई है। क्षेत्र के रेही स्थित पुरुषोत्तम सिंह इंटर कॉलेज के यूपी बोर्ड की इंटर की छात्रा संस्कृति सिंह ने 89.8 प्रतिशत प्राप्त कर जनपद में छठवां स्थान पाकर अपने माता पिता सहित कालेज का मान बढ़ाया। इसी कालेज के इंटर के शिवानी सिंह 82.8, अभिषेक सिंह 79.6, आंचल यादव 77, उत्कर्ष सिंह 77, रेखा पटेल 76, सविता विद 76 प्रतिशत और हाई स्कूल में अल्का अहरोही 88.5, शिवानी पटेल 88, रिया यादव 87.16, पुनम पटेल 86.17, विभव पांडेय 85.67 प्रतिशत प्राप्त कर कालेज और क्षेत्र का गौरव बढ़ाने का काम किया। कालेज के प्रधानाचार्य महेश कुमार सिंह ने छात्रों को बधाई शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

## चनेथू के बच्चों ने हाईस्कूल व इंटरमीडिएट परीक्षा परिणाम में बाजी मारी

जंघई। यूपी बोर्ड परीक्षा परिणाम घोषित होने पर शनिवार को चनेथू गांव के बच्चों ने हाईस्कूल इंटरमीडिएट परीक्षा परिणाम घोषित होने पर खुशी जाहिर करते हुए अपने विद्यालय, गुरुजनों, अभिभावकों के प्रति आभार जताया। हाईस्कूल, इंटरमीडिएट कक्षा में पास होने वाले छात्र, छात्राओं में जिसमें अनुगु शुक्ला, रितेश शुक्ला, गरिमा शुक्ला, सुशी शुक्ला, निखिल शुक्ला, विवेक दुबे, आशुतोष पांडेय, राजा शुक्ला आदि लोग मौजूद रहे।









## प्रतापगढ़ संदेश

## घर से निकले युवक की हत्या कर शव नाले में फेंका

परिजनो ने अज्ञात के विरुद्ध दी हत्या की तहरीर, शव को पुलिस ने पीएम के लिए भेजा

## अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। लालगंज क्षेत्र में कदौरा साधू का पुरवा गांव में बीती रात एक युवक को मारकर नाले में शव को फेंक दिया गया। बता दें कि शनिवार की शाम घर से बाहर गए युवक का शव दूसरे दिन सुबह गांव के करीब स्थित नाले के पास पड़ा मिला, जिसमें युवक के मुंह से खून निकला था और अनेक चोट के निशान थे। इस सम्बन्ध में परिजनों ने अज्ञात हत्यारों के विरुद्ध लालगंज कोतवाली में रिपोर्ट दर्ज कराई है। स्थानीय कोतवाली क्षेत्र के केदौरा साधू का पुरवा निवासी जीतलाल सरोज (38) पुत्र माताबदल सरोज शनिवार की शाम घर से बाहर घूमने निकला था। दर



युवक के शव की जांच-पड़ताल करती पुलिस।

रात तक जब वह घर नहीं लौटा तो परिजनों को चिंता होने लगी। घर के लोगों ने रात भर उसे ढूढ़ने का काफी प्रयास किया लेकिन उसका कुछ भी पता नहीं लग सका। रविवार की सुबह ग्रामीणों ने जीतलाल का शव गांव के करीब स्थित नाले के पास पड़ा देखा। लोगों ने परिजनों को घटना की जानकारी

दी। मौके पर पहुंचे परिजनों में कोहराम मच गया। सूचना पर सीओ रामसूरत सोनकर, प्रभारी कोतवाल कमलेश पाल समेत रानीगंज कैथौला की फोर्स भी घटना स्थल पर पहुंच गईं। मृतक के शरीर पर चोट के कई निशान मिले साथ ही नाक व मुँह से रक्त स्राव भी हुआ था। मृतक के बेटे धीरेंद्र सरोज ने

## रानीगंज कैथौला क्षेत्र में नहीं थम रही है घटनाएं

## अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। स्थानीय कोतवाली के रानीगंज कैथौला क्षेत्र में घटनाएं थमने का नाम ही नहीं ले रही है। पखवारे भर में लगातार घटनाओं को अंजाम देकर बदमाश पुलिस को खुली चुनौती दे रहे हैं। बीते तीन जून को गैर जनपद के युवक की कैथौला के ककराहा घाट पर हत्या कर फेंक दिया गया था। यही नहीं इसी गांव में इसी रात बदमाशों ने राजेन्द्र सिंह फौजी व सत्येन्द्र सिंह के यहां लाखों की हुई चोरी की घटना में हांफ रही पुलिस को केदौरा में हत्या की वारदात को अंजाम देकर पुलिस को खुली चुनौती दे डाली।

अज्ञात के विरुद्ध हत्या की तहरीर दी है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पीएम के लिए भेज दिया।

पुलिस का कहना है कि मामले में जांच कर जल्द खुलासा किया जायेगा।

## लेफ्टिनेंट कर्नल बनकर सैनिक परिवार का सुरेन्द्र ने बढ़ाया मान

## अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। भारतीय सेना में अपना गौरवशाली योगदान देने वाले परिवार के बेटे का भी

## सौभाग्य योजना से गांव होंगे रोशन

## लालगंज, प्रतापगढ़।

कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी के सांसद निर्वाचित होते ही बिजली विभाग की केन्द्रीय सौभाग्य योजना की बड़ी सौगात यहां मिली है। क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना के प्रयास से पहले ही प्रदेश से भेजाए गए प्रस्ताव की दिल्ली में प्रमोद तिवारी की प्रभावी पहल से रामपुर खास विधानसभा क्षेत्र के कई दर्जन गांव अब जर्जर तार व पुराने जीर्ण शीर्ष बिजली के खम्भों से निजात पा सकेंगे। इन गांवों में सौभाग्य योजना के तहत नये पोल तथा केबिल मुहैया होने से ग्रामीणों में रविवार को खुशी का माहौल देखा गया। रविवार को क्षेत्र के रामपुर संग्रामगढ़ ब्लाक के कस्बा ललीफपुर, जेबई, हरनाहर, रामपुर दाबी, देवारा तथा सांगीपुर विकासखण्ड के बसुआपुर, कुसौली, दौलतपुर के रेवली, परानीपुर व उदयपुर, कुम्भीआहमा, उमरार, अमावां, सेमरा, कटरीया, रतियापुर, कटरा बूबपुर, पूरे शुकुलपुर, कल्यानपुर कला, दीवानगंज बाजार, पश्चिम देउम, पदमाकरपुर, रामपुर कसिहा, उछापुर में जर्जर तारों व पुराने खम्भों को बदलने के लिए नये पोल व केबिल मुहैया होने से सुदृढ़करण का कार्य तेजी से शुरू हो उठा है। ग्रामीणों ने क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना व राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी के प्रति आभार जताया है।



लेफ्टिनेंट कर्नल सुरेन्द्र यादव।

लेफ्टिनेंट कर्नल के चयन पर गांव खुशी से इतरा उठा है। लालगंज तहसील के पूरे छह हाता निवासी रिटायर्ड सुबेदार मेजर शिव नारायण यादव के पुत्र सुरेन्द्र यादव लेफ्टिनेंट कर्नल चयनित हुए हैं। साधारण किसान परिवार के सुरेन्द्र के चयन की जानकारी होते ही गांव व परिवार खुशी से झूम उठा है। पिता शिव

नारायण यादव भी देश की सेना को अपनी जाबाज सेवाएं दे चुके हैं। वहीं सुरेन्द्र के बाबा स्व. जगेश्वर प्रसाद यादव ब्रिटिश सेना में सेवारत रहे हैं। सैनिक परिवार के सुरेन्द्र यादव ने भी भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट कर्नल की सफलता लेकर परिवार व गांव का मान बढ़ाया है। सुरेन्द्र की मां किरन यादव गृहणी हैं। सफलता पर सुरेन्द्र ने अपनी मां किरन के द्वारा दिये गये संस्कार को सेहरा दिया है। गांव के लोगों ने इस कामयाबी पर परिवारजनों का मुंह मीठा कराकर अपनी खुशी बचा की। पूर्व प्रधानाचार्य बृजकिशोर तिवारी, सांसद प्रमोद तिवारी के निजी सचिव अरूण पाण्डेय, रामसुमेर यादव, कृष्ण कुमार सरोज, सुबेदार मेजर बीडी सिंह बघेल आदि ने मेधावी सुरेन्द्र की सफलता पर गांव तथा इलाके के लिए गौरवपूर्ण क्षण कहा है।

## ट्रैक्टर की चपेट में आने से गैरेज संचालक की मौत, कोहराम

## अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। ट्रैक्टर व बाइक भिड़त में बाइक सवार गैरेज संचालक की इलाज के दौरान मौत हो गयी। मौत से परिजनों में कोहराम मचा है।

लालगंज कोतवाली के सगरा सुंदरपुर बाजार निवासी जयराम सरोज का पुत्र सुशील उर्फ रोहित सरोज 30 शनिवार की देर शाम बाइक से लालगंज की तरफ से सगरा सुंदरपुर बाजार आ रहा था। पोस्ट ऑफिस के सामने ईंट से लदे ट्रैक्टर की बाइक से अचानक भिड़त हो गयी। गंभीर रूप से

चुटहिल रोहित को बाजार के लोगों ने आननफानन में लालगंज दुग्धा सेंटर इलाज के लिए भेजवाया। गंभीर हालत में उसे प्रारंभिक उपचार के बाद प्रतापगढ़ मेडिकल कालेज रेफर कर दिया गया। वहां भी रोहित की हालत नाजुक देख चिकित्सकों ने उसे प्रयागराज मेडिकल कालेज रेफर कर दिया।

इलाज के दौरान शनिवार की रात लगभग दो बजे रोहित ने दम तोड़ दिया। मौत की सूचना मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया। मृतक रोहित सगरा बाजार में ही एक पेट्रोल पम्प के पास बाइक गैरेज

का संचालन किया करता था। मृतक रोहित अपने पीछे पुत्र आदर्श 11 प्रतीक 07 तथा रूद्र 03 व पत्नी मंजू को निराश्रित छोड़ गया है। दोपहर बाद जैसे ही सुशील का शव उसके घर पहुंचा पत्नी व बच्चे बिलख उठे। छोटे छोटे बच्चों का रोना बिलखना तथा मृतक की पत्नी का बार बार बेसुध हो जाना देख वहां मौजूद लोगों की आंखें भी भर आयीं। हालांकि एहतियात शव पहुंचने पर लालगंज प्रभारी निरीक्षक कमलेश पाल भी भारी फोर्स के साथ मौजूद दिखे।

## नाट्य मंचन से बहुत कुछ सीखने, समझने और मनन करने का मिलता है अवसर

भ्रातियों को दूर करने के लिये आरएसएस की नाट्य प्रस्तुति 22 को

## अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। समाज के लोगों को संघ संबंधी कुछ ऐतिहासिक घटनाएं एवं जानकारी प्राप्त कराने की दृष्टि से आवश्यक है कि प्रबुद्ध वर्ग विभिन्न रूपों में इन भ्रातियों, मिथकों को दूर कर समाज और भावी पीढ़ी को तथ्यपरक शुद्ध जानकारी संप्रिप्त करें।

इस कड़ी में ओएनजीसी के सहयोग तथा उत्तिष्ठ भारत संस्थान द्वारा आयोजित और श्री महालक्ष्मी क्रिएटिवीटीज, नागपुर की नाट्य प्रस्तुति हम करें राष्ट्र आराधन के माध्यम से उन भ्रातियों और धारणाओं का निर्मूलन करने का प्रयास किया गया। इस क्रम में नागपुर से आये अशोक कुमार त्रिपाठी एवं संस्कार भारती, प्रतापगढ़ इकाई के अध्यक्ष शिशिर खरे ने बताया कि 22 जून की शाम साढ़े छह बजे स्थानीय किशोरी सदन में नाट्य प्रस्तुति हम करें राष्ट्र आराधन का मंचन प्रतापगढ़ जनपद में भी आयोजित किया गया है। दाईं घंटे की प्रस्तुति में कई विषयों को, तथ्यों को उद्घाटित किया गया है जैसे डॉ.

हेडगेवार को संघ जैसा संगठित समिति गठित करने की आवश्यकता क्यों महसूस हुई, आजादी की लड़ाई में संघ की क्या भूमिका थी, देश के बंटवारे की आग में स्वयंसेवकों ने कैसे हजारों लोगों के प्राण बचाए। पत्रकार वार्ता में नागपुर से आये अशोक कुमार त्रिपाठी एवं संस्कार भारती, प्रतापगढ़ इकाई के अध्यक्ष शिशिर खरे ने कहा कि जनपद के कला मर्मज्ञ, च्यवसाई, विद्यार्थी, शिक्षा जगत के क्षेत्र से जुड़े सभी जन आदि को इस नाट्य मंचन से बहुत कुछ सीखने, समझने और मनन करने का अवसर तो मिलेगा ही साथ में नाट्य विधा, नाट्य शैली की इस अभूतपूर्व प्रस्तुति से उन्हें इस विधा के प्रति रचनात्मक भाव की जाग्रति भी होगी। पत्रकार वार्ता में भाजपा के जिला अध्यक्ष हरि ओम मिश्रा, राजन तिवारी, डा. सौरभ पाण्डेय, रतन चन्द्र जैन, गोविन्द खंडेलावाल, संजीव आहूजा, सुनील प्रभाकर, आनंद आशीष जायसवाल सहित जनपद की अनेक गणमान्य व्यक्तियों तथा बुद्धिजीवी उपस्थित थे।

श्रीवास्तव, रमेश पटेल, सुरेंद्र प्रसाद पांडे, आशीष श्रीवास्तव, डॉ. रंगनाथ शुक्ला, राज नारायण सिंह, अरविंद श्रीवास्तव, सत्यांशु ओझा, संजय तिवारी, धीरेंद्र नारायण चड्ढा, क्षितिज श्रीवास्तव, शिव शंकर सिंह, डा. गौरव त्रिपाठी, अपिपत खंडेलावाल, दिनेश सिंह दिन्नु, कादम्बरी, अनुराग खंडेलावाल, अंशुमान सिंह, कुलदीप सिंह, राजेश जयसवाल राजा, सत्य प्रकाश पांडे, सर्वोत्तम पांडे, सुमन खरे, रजनीश तिवारी, शैलेंद्र तिवारी, राजीव कुमार, डॉ. संतोष शुक्ला, सत्य प्रकाश पांडे, दिनेश अग्रहरी, शीतांशु ओझा, मनोज सिंह, डा. राम प्रताप सिंह, नरेन्द्र बहादुर सिंह, कुलदीप, उदय भानु सिंह, लक्ष्मी मिश्रा, मुरलीधर केसरवानी, अशोक शर्मा, आशुतोष सिंह, प्रभात मिश्रा, पंकज तिवारी, राजेश मिश्रा, रमाशंकर शुक्ल, सत्य प्रकाश पांडे, रमाशंकर शुक्ल, सत्य प्रकाश पांडे, सिंहा, रामानंद मिश्रा, रमेश मिश्रा, आशीष जायसवाल सहित जनपद की अनेक गणमान्य व्यक्तियों तथा बुद्धिजीवी उपस्थित थे।



मां ज्वाला देवी मंदिर चढ़ोत्तरी की नीलामी में मौजूद अतिथिगण।

## अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। सिद्ध पीठ मां ज्वालामुखी देवी धाम का पांच दिवसीय आषाढ़ मास आषाढ़ मास की कृष्ण पक्ष की पंचमी से नवमी तिथि 19 से 23 जून तक पांच दिवसीय मेला की नीलामी मंदिर त्रिपाठी की अध्यक्षता में शनिवार को संपन्न हुई।

नीलामी प्रारंभ के पूर्व मां ज्वालामुखी देवी मंदिर ट्रस्ट सचिव डॉ. विजय यादव ने नीलामी प्रक्रिया की ठेकेदारों के समक्ष नियम एवं शर्तों की जानकारी दी। उसके बाद नीलामी प्रक्रिया में प्रेमनाथ दक्षिण, रज्जन लाल यादव, शिवप्रसाद पांडे, बंडूक सोनकर, राजकुमार चंद्र, विरेंद्र कुमार निषाद, सोनू मिश्रा तथा महेश सोनकर समेत

## पांच दिवसीय मेले का हुआ शुभारंभ

आठ लोगों ने अपना अपना भाग आजमाने मैदान में उतरे। सर्वप्रथम प्रेमनाथ दक्षिण ने पहली बोली 30 हजार रु० की बोली तथा ट्रस्ट उपाध्यक्ष अधिकारी सतीश चंद्र त्रिपाठी की अध्यक्षता में शनिवार को संपन्न हुई।

परंतु उप जिलाधिकारी सतीश चंद्र त्रिपाठी नीलामी प्रक्रिया लागू करके धन राशि में बढ़ोतरी का संचालन पुजारी गंगा प्रसाद शुक्ला ने किया। इस मौके पर मानिकपुर

## शराबी की हरकतों का विरोध, पड़ा भारी, मारपीट में मासूम की टूटी हड्डी

## अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। पड़ोसी शराबी की हरकतों से परेशान परिवार में जब उसे ऐसा करने के लिए मना किया तो आरोपियों ने मारपीट व गाली-गलौज करते हुए शराबी ने जान से मारने की धमकी दी। दूसरे दिन फिर से मारपीट में पीड़ित के परिवार की एक मासूम बच्चे की गले की हड्डी टूट गई इस संबंध में पीड़ित ने पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के चरैया गांव के रहने वाले बबलू पुत्र रामनाथ ने शिकायती पत्र देकर बताया कि वह अनुसूचित जाति का है। पड़ोसी व्यक्ति उससे आए दिन शराब पीकर गाली गलौज करता है उसने जब इसका विरोध

किया तो उस लोगों ने मारपीट किया उसके दूसरे दिन फिर से शराबी तथा उसके परिवार वालों ने घर में घुसकर जातिसूचक शब्दों का इस्तेमाल करते हुए परिवार के अन्य

लोगों को मारना पीटना शुरू कर दिया, जिसमें एक मासूम बच्चे के गले की हड्डी टूट गई इस संबंध में आरोपियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग की है।

## शाखा प्रबन्धक के खिलाफ धोखाधड़ी का केस, चेकबुक से हड़पे लाखों की धनराशि

## अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। बैंक शाखा प्रबंधक पर खातेदार की चेकबुक के जरिए बारह लाख सरसट हजार नौ सौ पचास रुपए धोखाधड़ी से निकाल लिये जाने के आरोप में पुलिस ने गंभीर धाराओं में केस दर्ज किया है। लीलापुर के बंदा का पुरवा निवासी राम नारायण शुक्ल पुत्र शारदा शुक्ला ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि लीलापुर स्थित भारतीय स्टेट बैंक का वह खातेदार है। शाखा प्रबंधक ने वादी के खाते के लिए ब्रान्च कोड तथा बार कोड से अंकित चेक को अपने पास रख लिया। आरोप है कि शाखा प्रबंधक उसकी चेक बुक का दुरुपयोग करते हुए धोखाधड़ी व जालसाजी से कई बार में बारह लाख सरसट हजार नौ सौ पचास रुपए निकाल लिये। तहरीर के आधार पर पुलिस ने शनिवार की रात आरोपी शाखा प्रबंधक के खिलाफ धोखाधड़ी व जालसाजी का केस दर्ज किया है।

## कायाकल्प अवार्ड स्कीम में जनपद को मिला प्रथम स्थान

## अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। कायाकल्प अवार्ड स्कीम वर्ष 2021-2022 में जनपद को प्रथम पुरस्कार मिला है। जनपद में प्रा. स्वा.केन्द्र सुखपाल नगर व एचडब्ल्यूसी यादवपुर सुखपाल नगर ने प्रथम स्थान हासिल कर प्रदेश व जनपद का नाम गौरान्वित किया। बता दें कि डा० डी.के. सरोज सहित समस्त कर्मचारियों की मेहनत रंग लागई और कर्मचारियों में खुशी का माहौल है।

## घर में घुसकर आरोपियों ने की मारपीट तथा गाली गलौज

## अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। पुरानी रंजिश की वजह से आरोपियों ने एक व्यक्ति के घर में घुसकर मारपीट करते हुए गाली गलौज किए, जान से मारने की धमकी दिया। पीड़ित ने इस संबंध में पट्टी कोतवाली में शिकायती पत्र देकर इंचार्ज की गुहार लगाई है। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के असुदीगांव के रहने वाले जवाहरलाल के कोतवाली में शिकायती पत्र दिया और बताया कि शनिवार की शाम को उसके पड़ोसी चार लोग एकत्रित होकर उसके घर में घुस आए और गाली गलौज करते हुए मारपीट की और जान से मारने की धमकी दी पीड़ित ने इस संबंध में पट्टी कोतवाली में तहरीर दिया है और आरोपियों के खिलाफ कार्यवाही की मांग की है।

## खस्ताहाल सड़क बनवाये जाने की मांग को लेकर ग्रामीणों ने किया प्रदर्शन

## अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मोहनगंज से जेतवारा रामवन गमन मार्ग पर नरायनपुर में डगमगबाबा मोड़ से शाहपुर गांव में जाने वाली सड़क जो 2004 में जिला पंचायत से बनी थी पिछले 10 वर्षों से खराब होकर गड्ढों में बदल चुकी है। इसी को लेकर रविवार को ग्रामीणों ने प्रदर्शन किया।

बता दें कि किसी जनप्रतिनिधि या सरकार के कर्मचारियों को नजर उस पर नहीं पड़ी। लोगों के बार कई बार इसकी शिकायत भी कर चुके हैं। सोचने की बात तो यह है कि खुद सरकार का एक इन्टरकालेज राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय भी इसी सड़क

## 2004 में जिला पंचायत से बनी थी सड़क



सड़क बनवाये जाने की मांग को लेकर प्रदर्शन करते ग्रामीण।

पर है। विद्यालय के कर्मचारी भी के बार सड़क की खस्ता हालत को सुधारने के लिए प्रयास कर चुके हैं। ग्रामीणों की शिकायत है कि कभी महिलाओं के डिलीवरी पर एम्बुलेंस बुलाते हैं तो उनको

मरीज को चारपाई पर लाद कर एक किलोमीटर पैदल आना पड़ता है। सरकार के द्वारा सड़कों को गड्ढा मुक्ति के वादे को सुनकर उनको इस सड़क की भी सुध लेने के लिए सैकड़ों लोग इकट्ठा होकर

नारे बाजी किये। ग्रामीणों में सावित्री देवी, राजकुमारी देवी, कमलेश यादव, रामजीत सिंह, मीना सरोज, उर्मिला, निम्बलाल, भानू सिंह, विजय कुमार सरोज, संदीप सरोज, शेर बहादुर, अमृत लाल शर्मा, अनूप, तेजप्रताप यादव, धनपति देवी, मनसा देवी, कौशलेंद्र यादव, विवेक, दीपेश, हर्ष कुमार, संजय कुमार, अनिल कुमार, बांके लाल सहित सौ से अधिक महिलाएँ और पुरुष तथा बच्चे मौजूद रहे।

दुकान के सामने बैठने पर महिला से भिड़ा दुकानदार

लालगंज, प्रतापगढ़। रविवार को बेटे को बस पर बैठाने आई महिला से दुकान के सामने बैठने को लेकर दुकानदार से विवाद खड़ा हो गया। देखते ही देखते दोनों के बीच मारपीट शुरू हो गई। जानकारी पर पहुंची पुलिस ने दोनों पक्षों को चैकी लाकर चालान कर दिया। स्थानीय कोतवाली क्षेत्र निवासी गोविन्द सरोज रविवार को सुबह परदेश जा रहा था। परिजन उसे रानीगंज कैथौला बस स्टॉप पर एक दुकान के सामने बैठक साधन के इंतजार ही कर रहे थे। आरोप है कि इसी बीच बोधी सिंह का पुरवा निवासी पंकज ने आकर दुकान के सामने न बैठने के लिए फटकार लगाई महिला व छोटा बेटा मिथुन सरकारी जमीन कहर कर न उठने की बात कही। बस इतने में दुकानदार व महिला के बीच खूब जमकर मारपीट होने लगी। मामला बस स्टॉप का होने के कारण वहाँ सैकड़ों की संख्या में लोग इकट्ठा हो गए। किसी ने मारपीट की सूचना पुलिस को दे दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने दुकानदार व महिला के बेटे को चैकी लाकर घटना के बावत पृष्ठताछ करने के बाद दोनों का चालान कर दिया।

## दीप प्रज्वलन के साथ शीतला सप्तमी का मेला प्रारम्भ

## अखंड भारत संदेश

परियावां। सिद्ध पीठ मां ज्वालामुखी देवी धाम मानिकपुर का पांच दिवसीय आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष की पंचमी से नवमी 19 से 23 जून तक चलने वाला शीतला सप्तमी मेला देवी मां के पूजन व दीप प्रज्वलन करते हुए मेले का विधिवत शुभारंभ किया गया। मानिकपुर थाना प्रभारी निरीक्षक मनीष पांडे व मां ज्वालामुखी देवी मंदिर ट्रस्ट सचिव डॉ. विजय यादव ने संयुक्त रूप से मेले को सफुल्ल संपन्न कराने के लिए माता के दरबार में माथा टेका तथा मां से आशीर्वाद की कामना की। मंदिर ट्रस्ट सचिव डॉ. विजय यादव ने जिला प्रशासन पुलिस विभाग व मानिकपुर नगरवासियों से मेला को सफुल्ल संपन्न कराने के लिए सहयोग की अपील तथा देवी शक्तियों की आराधना की पूजन अर्चन कार्यक्रम को पुजारी पं.गंगा प्रसाद शुक्ला ने सम्पन्न कराया। इस मौके पर तीर्थ पुरोहित संघ अध्यक्ष पंडित प्रेम नाथ दक्षिण अजय कुमार मिश्रा, शिवप्रसाद पंडा, विरेंद्र कुमार निषाद, महेश कुमार सोनकर समेत बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

बोलीदाता तथा मंदिर परिसर में मौजूद सभी के प्रति सचिव डॉक्टर विजय यादव ने धन्यवाद व आभार व्यक्त किया। मेला शुभारंभ में शामिल होने की जन सामान्य से अपील की है। नीलामी प्रक्रिया का संचालन पुजारी गंगा प्रसाद शुक्ला ने किया। इस मौके पर मानिकपुर

थाना प्रभारी निरीक्षक मनीष कुमार पांडे, फूलचंद यादव बालकृष्ण शुक्ला, धनंजय कुमार मिश्रा, दिगंबर प्रसाद त्रिपाठी वरुण विश्विंद देव केशरवानी रमेश मोदनवाल सकेदार पुषेंद्र पुषेंद्र मौर्य गुड्डू पांडे सुखी राम निषाद समेत बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।



## खबर संक्षेप



### कौशांबेश्वर संकट मोचन आश्रम में पांच दिवसीय कथा के साथ हुआ भव्य भंडारा

कौशाम्बी। मंझनपुर तहसील के विकास खंड कौशाम्बी खस में कौशांबेश्वर संकट मोचन धाम कौशाम्बी आमाकुआं जोटका में पांच दिवसीय रामकथा के साथ महाप्रसाद भंडारा के साथ समापन हुआ जिसमें भगवान राम सनातनी भक्तों ने सहयोग किया वही कथावाचक आचार्य देवी प्रसाद भक्तों के स्नेह से भाव विभोर हुए कौशांबेश्वर संकट मोचन धाम आमाकुआं जोटका के महंत बाबा बुद्धदास जी एवं मंदिर के संरक्षक राजू केशरवानी ने सभी भक्तों का आभार व्यक्त किया, भंडारा के महाप्रसाद में जजमान शिवाकांत मिश्रा रमेशचंद्र केशरवानी, अकित केशरवानी, रामहित पूर्व प्रधान मुस्तफाबाद, शुभम दुबे, अनिल केशरवानी, अकित केशरवानी, अंकुर केशरवानी, रादीप, लालापुर, प्रयागराज, चित्रकूट एवं क्षेत्रीय सनातनी भक्त कथा एवं महाप्रसाद पा कर भाव विभोर हुए।

# किशोरी और युवक की अलग-अलग संदिग्ध दशा में मौत

एक मौत को दुर्घटना दूसरी मौत को आत्महत्या मान रही है पुलिस, फिंगरप्रिंट और परिस्थिति जन्म साक्ष्य को नजरअंदाज कर पुलिस ने की बड़ी भूल

### अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी कोखराज थाना क्षेत्र के टेढ़ी मोड़ सहजादपुर पुलिस चौकी अंतर्गत एक युवक और एक किशोरी की संदिग्ध अवस्था में रविवार की दोपहर मौत हो गई है किशोरी की लाश सहजादपुर रेलवे स्टेशन के अप और डाउन रेल लाइन के बीच खम्भे के पास पड़ी मिली है और युवक की लाश उसके दुकान के पीछे टॉन शेड की धन्नी से बंधी दिखाई पड़ी है दो लोगों की मौत की सूचना मिलने के बाद दोनों घटनास्थल पर पुलिस पहुंची है और किशोरी के साथ साथ युवक के शव को कब्जे में लेकर पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है दोनों मौत के बाद दोनों परिवार के लोग कुछ जुवान खोलने को तैयार नहीं है एक साथ दो लोगों की मौत तमाम अनुसुलझे सवाल छोड़ रही है ग्रामीण भी दो लोगों की अचानक मौत के बाद खुलकर कुछ बोलने को तैयार नहीं है लेकिन ग्रामीणों के चेहरे और आंखें बहुत कुछ कहने को बताव है।

जानकारी के मुताबिक कोखराज थाना क्षेत्र के पलटी पुर गांव निवासी अनिल कुमार जयसवाल उम्र लगभग 25 वर्ष पुत्र गौरीशंकर जयसवाल अपने गांव से एक किलोमीटर दूर टेढ़ी मोड़ चौराहे पर



किशोरी की लाश के बाद रेल लाइन पर लगी ग्रामीणों की भीड़

रेडिमेड की दुकान खोल रखे हैं रविवार की दोपहर दुकान के पीछे टॉन शेड की धन्नी से उनकी लाश लटक रही थी अनिल की मौत के बाद भी दुकान खुली थी धन्नी से लटक कर अनिल के आत्महत्या किए जाने की घटना संदिग्ध प्रतीत हो रही है सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने अनिल के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है मजरा मियां का पूरा निवासी कोमल प्रजापति उम्र 17 वर्ष पुत्री बड़े लाल घटनास्थल से फिंगर प्रिंट्स वा परिस्थिति

जन्म साक्ष्य एकत्रित करने का प्रयास पुलिस ने नहीं किया है अनिल की दुकान के बगल में उनके भाई व अन्य खास लोगों की भी दुकान है लेकिन अनिल की मौत पर कोई कुछ जुवान खोलने को तैयार नहीं है। इसी थाना क्षेत्र के अंधावा गांव के मजरा मियां का पूरा निवासी कोमल प्रजापति उम्र 17 वर्ष पुत्री बड़े लाल घटनास्थल से फिंगर प्रिंट्स वा परिस्थिति



युवक की मौत के बाद घटनास्थल पर पुलिस और भीड़

इंटर कॉलेज में कक्षा आठ की छात्रा है टेढ़ी मोड़ चौराहा होकर साइकिल से छात्रा का प्रतिदिन स्कूल आना जाना था अनिल की मौत के एक घंटे बाद कोमल प्रजापति की लाश सहजादपुर रेलवे लाइन के पूर्वी छोर होम सिग्नल के पास अप और डाउन रेल लाइन के बीच विजली खम्भे के पास पड़ी मिली है किशोरी की लाश खम्भे के पास पड़ी होने की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची है और

किशोरी के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है घटनास्थल से फिंगरप्रिंट और परिस्थिति जन्म साक्ष्य एकत्रित करने का प्रयास पुलिस द्वारा नहीं किया गया है एक साथ अगल-बगल गांव के दो लोगों की मौत ने तमाम सवाल खड़े कर दिए हैं हालांकि पुलिस दोनों मौत के मामले में दुर्घटना और आत्महत्या साबित करने में अपनी उजां लगाने में लगी है।

# अनियंत्रित जेसीबी ने ठेले वाले को कुचला मौके पर दर्दनाक मौत

ठेले वाले की मौत से आक्रोशित ग्रामीणों ने किया चक्का जाम

### अखंड भारत संदेश

अष्टुवा कौशाम्बी। अनियंत्रित जेसीबी ने सड़क किनारे से जा रहे ठेले में टक्कर मार दी, हादसे में ठेले वाले युवक की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई, आक्रोशित ग्रामीणों ने चक्का जाम कर दिया, सूचना पर पहुंची पुलिस जाम को खुलवाने के लिए ग्रामीणों को समझाने में जुटी हुई है। घटना सैनी कोतवाली क्षेत्र के कमालपुर गांव के पास एक जेसीबी चालक अनियंत्रित हो गया और सड़क किनारे से जा रहे ठेले वाले को कुचल दिया, हादसे में ठेले वाले की मौत हो गई, आक्रोशित ग्रामीणों ने चक्का जाम कर दिया, चक्का जाम



ठेले वाले की मौत के बाद घटनास्थल पर लगी भीड़

के चलते सैनी लेहदरी रोड पर कई किलोमीटर लम्बा जाम लग गया। सूचना पर पहुंची पुलिस शव को कब्जे में लेकर लोगो को समझाने का

प्रयास कर रही है लेकिन आक्रोशित ग्रामीण मानने को तैयार नहीं है पुलिस आक्रोशित ग्रामीणों को समझाने में जुटी हुई है।

# पट्टा धारक के बिना सहमति के तालाब से हो रही मिट्टी की अवैध खुदाई

शिकायत के बाद जेसीबी को चरवा पुलिस ने पकड़ा बाद में ले देकर छोड़ा

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के चरवा उत्तर थोक गांव के केसपति-पत्नी राकेश कुमार पासी के नाम आराजी संख्या 652 रकबा 1.1 8 हेक्टेयर जो कि 2018 में पट्टा हुआ था केसपति उसी तालाब में मछली पालन करके अपने परिवार का भरण पोषण कर रही थी। सप्ताह पहले उसी तालाब में ग्राम सभा के ही पूरे कलापत गांव के राजू पासी पुत्र अज्ञात ने रात्रि में जेसीबी चलाकर अवैध मिट्टी खनन करके मिट्टी का व्यापार करने लगा जब महिला को पता चला तो महिला ने उससे पूछा कि हमारे पट्टे की जमीन में क्यों आप मिट्टी खनन कर रहे हैं तब उक्त ने कहा कि आप देखो 18 जून की बीती रात में फिर अवैध खनन उक्त व्यक्ति पट्टे के तालाब पर कर रहा था महिला को जब पता चला तो महिला के पति घर के अन्य सदस्यों के साथ पहुंचे रात्रि 1:00 बजे देखा तो जेसीबी चल रही थी तभी महिला ने डायल 112 पर फोन करके सूचना दिया मौके पर पुलिस पहुंची जेसीबी ड्राइवर व ट्रैक्टर सहित थाने पर ले आए पुलिस वालों ने कहा कि सुबह आप थाने आ जाइयगा जब सुबह हुई तो महिला अपने पति राकेश कुमार के साथ थाने पर पहुंची तो ना जेसीबी थी और ना ही कोई ट्रैक्टर था मछली पालन के लिए दिग्ग पट्टे में अवैध तरीके से मिट्टी खनन किए जाने का मामला बेहद गंभीर है मामले में तहसील से लेकर थाना पुलिस की भूमिका सवाल के घेरे में है यदि पट्टा धारक ने विरोध किया तो मिट्टी खनन करने वाला उस पर हमला भी कर सकता है मामले में थाना पुलिस की भूमिका भी सवाल में है इससे साफ जाहिर होता है कि जिम्मेदारों की संतुष्टता से मिट्टी का अवैध खनन हो रहा है नियम कानून के विपरीत चायल तहसील के जिम्मेदारों का कारनामा कब तक चलेगा आखिर कभी न कभी तो खुलासा होकर ही रहेगा।

# बीत गया फादर्स डे वृद्ध जनों से मिलने नहीं आए बेटे !

### अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। बेटों से मिलने के लिए वृद्धजनों की आंखें तरसते रही लेकिन पूरे दिन बीत जाने के बाद वृद्ध आश्रम के वृद्धजनों से मिलने उनके बेटे नहीं आए हैं फादर्स डे पर वृद्धजनों के चेहरे पर बेटों के ना पहुंचने की कमी साफ झलक रही थी वृद्धजन आश्रम संचालक आलोक राय ने वृद्धों के साथ मिलकर उन्हें मिठाई खिला का फादर्स डे मनाया। वृद्धाश्रम ओसा में धूमधाम से फादर्स डे मनाया गया मुख्यालय के ओसा स्थित वृद्ध आश्रम में फादर्स डे पर अनेखा ही रूप देखने को मिला वृद्धाश्रम संचालक आलोक राय ने मिठाई खिला कर वृद्धजनों का आशीर्वाद लिया इस मौके पर बुजुर्गों की आंखें

वृद्ध आश्रम संचालक ने वृद्ध जनों को मिठाई खिलाकर उनके साथ मनाया फादर्स डे



फादर्स डे पर वृद्ध जनों को मिठाई खिलाकर संचालक आलोक राय

डबडबा उठी उन्होंने इस मौके पर मौजूद लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि पिता दुनिया का ऐसा व्यक्ति है जो जिंदगी भर अपने परिवार के लिए मेहनत करता है और अपने परिवार पर अपना सब कुछ न्योछावर कर देता है हमें मां की तरह पिता का प्यार दिखाई नहीं देता लेकिन पिता ही

ऐसा शख्स है जो हमें दुनिया में अच्छे बुरे का अहसास करवाता है वह पिता ही है जो बच्चों को जीने का दंग सिखाता है एक पिता एक बच्चे का आदर्श और सक्षम नायक होता इसलिए फादर्स डे मनाया जाता है ताकि हम अपने पिता के प्रति अपने सच्चे प्यार को बर्बाद कर सकें।

# केंद्र सरकार की अग्निवीर योजना देश के युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ : अजय सोनी

अग्निवीर योजना की वापसी को लेकर जल्द ही सड़क पर उतरेंगी सकिपा

कौशाम्बी समर्थ किसान पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं जिला पंचायत सदस्य अजय सोनी ने केंद्र सरकार द्वारा युवाओं को नौकरी देने के लिए लाई गई अग्निवीर योजना पर नाराजी जाहिर की है और इसे देश के युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ बताया है समर्थ किसान पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और जिला पंचायत सदस्य कौशाम्बी अजय सोनी ने केंद्र सरकार द्वारा लाई गई अग्निवीर पर कहा है कि यह योजना देश के युवाओं के भविष्य के साथ वाकई खिलवाड़ है और केंद्र सरकार को देश के युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ नहीं करना चाहिए। यह योजना युवाओं के भविष्य के साथ धोखा है। इस योजना को केंद्र सरकार को तुरन्त वापस ले लेना चाहिए। आगे कहा कि इस योजना में चार साल नौकरी करने के बाद देश का युवा नौकरी की तलाश में फिर दर दर भटकेंगा और उसे नौकरी के लिए लाले पड़ेंगे और उसका भविष्य बर्बाद होगा। आगे कहा कि केंद्र की भाषणा सरकार देश के युवाओं को प्रति वर्ष दो करोड़ नौकरी देने के वादे के बल पर केंद्र की सत्ता में आई है और अब जबकि साल 2024 का आम चुनाव नजदीक आ रहा है, ऐसे में अपने दामन के दाग को छुड़ाने के लिए ऐसी युवा विरोधी योजना लाई है जिससे युवाओं का भविष्य बर्बाद हो जाएगा। इसी के साथ अजय सोनी ने कहा कि सरकार को केंद्र सरकार युवाओं को नौकरी देना चाहती है तो पूर्णकालिक समय पर नौकरी दे। आगे कहा कि समर्थ किसान पार्टी केंद्र सरकार से देश के युवाओं को पूर्णकालिक समय के लिए नौकरी देने की मांग करती है। इसी के साथ अजय सोनी ने देश के आंदोलन युवाओं से भी देश की सम्पत्ति को नुकसान नहीं पहुंचाने एवं अहिंसक आंदोलन करने की अपील की है।



# पुलिस की जानकारी के बाद रात भर तालाब में गरजती है जेसीबी

कौशाम्बी। सराय अकिल थाना क्षेत्र के जुगसराजपुर गांव के तालाब में रात को जेसीबी से मिट्टी की खुदाई हुआ करती है जिस की हकीकत ग्रामीणों द्वारा कैमरे में कैद की गई है तालाब में जेसीबी चलने की सूचना सराय अकिल थाना क्षेत्र के कैनेली चौकी पुलिस को रहा करती है लेकिन चौकी पुलिस जेसीबी संचालक पर अंकुश नहीं लगा पा रही है ग्रामीणों में यह चर्चा है कि जेसीबी संचालक एक सपा का नेता होने के बावजूद भी भाजपा की योगी सरकार की पुलिस पर कैसे दबाव बनाकर अवैध खनन कर सकता है ग्रामीणों की चर्चाओं में जाएं तो जेसीबी संचालक अवैध खनन की होने वाली कमाई में से कहीं पुलिस भी तो हिस्सेदार नहीं बन चुकी है जो एक बड़ा सवाल और जांच का विषय है।

# निरोधात्मक कार्यवाही में 15 अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक के कुशल निदेशन में चलाया जा रहे अभियान में साधारण मारपीट व शांति भंग करने के आरोप में थाना करारी से पांच थाना सराय अकिल से चार थाना कोखराज से चार थाना मोहब्बतपुर पड़न्ता से दो कुल 15 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर चालान च्यायालय कर दिया है।

# चूने के गोदाम में पहुंचा बारिश का पानी उठने लगा धुंआ अवसर तलाश रहे जिम्मेदार

### अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। किसी विशेष अवसर पर नगर क्षेत्र में चूना छिड़काव करने के लिए मंझनपुर नगर पालिका स्थित गोदाम में चूने का भंडारण किया गया था शनिवार की दोपहर बाद पानी बरसने लगा और चूने के गोदाम में पानी पहुंच गया जिससे चूने में धुआं उठने लगा गोदाम में उड़ते धुआं को देखकर नगर पालिका के कर्मचारी और आसपास के लोगों में हड़कंप मच गया मामले की जानकारी फायर ब्रिगेड को दी गई है मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड ने पानी डालकर चूने के धुंए को शांत कराया है हालांकि इस धुंए के पीछे भी नगर पालिका के बेईमान अफसर अवसर की तलाश में लग गए हैं इसको वह बड़ी घटना का रूप देना चाहते हैं और नगरपालिका के जिम्मेदार अवसर की सोच के तहत अधिकारियों को भी गुमराह करने में लगे हैं चूने में पानी जाने से उठने वाले धुंए को शांत संकित से

# मंझनपुर नगर पालिका के गोदाम में लगी आग फायर ब्रिगेड कर्मचारियों ने बुझाई आग



नगर पालिका के गोदाम से उठ रहा धुंआ

बताया जाने लगा है इस मामले में भी नगरपालिका के बेईमान अधिकारियों को बल नियात फिर सामने आने लग गयी है चूने के धुंए पर नगरपालिका के बेईमान अफसर अवसर की खोज में लग गए हैं और नगरपालिका का बड़ा नुकसान बताने में लगे हैं जब कि चूने

के धुंए के प्रेशर से गोदाम का शटर फट कर बाहर आ गया था। फायर ब्रिगेड की टीम ने जब पानी डालकर आग बुझाई तो खौलता हुआ चूना और बिनीचिंग पाउडर बाहर बहने लगा जिससे फायर कर्मचारियों को धुंए पर काबू पाने में काफी मशक्कत करनी पड़ी है।

# यूपी बोर्ड परीक्षा में दुर्गा देवी के छत्र ने कौशांबी में किया टॉप

### अखंड भारत संदेश

कौशांबी। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के नतीजे घोषित हो चुके हैं। इन्हीं नतीजों में कौशांबी जिले के ओसा स्थित श्री दुर्गा देवी इंटर कालेज में पहले वाले होनहार छात्र आकाश दीप सिंह ने 94-83 प्रतिशत अंक हासिल कर डिस्टिक टॉप किया है। टॉपर आकाश दीप का सपना है कि वह सांफ्टवेयर इंजीनियर बन कर एक ऐसा एप्लीकेशन (स्टडी मटेरियल) तैयार करे। जिससे वो छात्र छात्राएं भी टॉप कर सकें जिनके पास हुनर और प्रतिभा होते हुए भी सफलता हासिल करने में चूक जाते हैं। टॉपर आकाश के सपने को जान उसके कालेज के प्रिंसिपल ने तत्काल कालेज की ओर से उसकी इंटर की पढ़ाई का खर्च उठाने की घोषणा कर दी है।

मूलतः फतेहपुर जिले के गोपालपुर धाता के रहने वाले उदयभान सिंह पेशे से जिला कचहरी में अधिकारी हैं। उनकी पत्नी देमा देवी एक कुशल ग्रहणी होने के साथ अधिवक्ता हैं। उनके 2 बच्चे हैं। एक आकाश दीप सिंह जिसने हाई स्कूल की परीक्षा में जिले में अपने होनहार होने का लोहा मकाया है। दूसरी बेटा जो अभी 7वीं में पढ़ाई करती है। शिक्षित परिवार होने के नाते पढ़ाई का मर्म

# कौशांबी का टापर आकाश दीप बनेगा सांफ्टवेयर इंजीनियर: डिस्टिक टॉपर के स्कूल देगे उसे मुफ्त स्टडी मटेरियल, पिता बोले-सपना था बेटे को प्रोफेसर बनाउगा लेकिन बेटा इंजीनियर बनाना चाहता है तो पूरा करूंगा उसका सपना

परिवार को पता है। लिहाजा आकाश दीप सिंह बताते हैं कि वह परीक्षा के नतीजे आने से पहले काफी नर्वस था कि पिता नहीं वह मैं पिता की उम्मीदों पर खरा उतार पाया गया नहीं। नतीजे आने के बाद परिवार में खुशी का माहौल है। आकाश दीप सिंह के मुताबिक टॉप करना उनकी पहली सोची है। वह एक ऐसा इंजीनियर बनाना चाहते हैं जो उन होनहार बच्चों के प्रतिभा को निखार कर आगे ला सके जो किसी न किसी छोटी की समस्या से सफलता की सोची चढ़ने से चूक जाते हैं। वह ऐसा एप्लीकेशन तैयार कर एक नए समाज की स्थापना

करना चाहते हैं जिसमें कोई भी पिछली पॉक्ति में न खड़ा दिखाई पड़े। आकाश दीप सिंह के पसंदीदा सब्जेक्ट मैथ फिजिक्स है। जिसमें उसके शत प्रतिशत अंक आए हैं। उसके सबसे कमजोर विषय एसएसटी और आर्ट्स है। जिसमें उसके कम अंक हासिल हुये हैं।

आकाश दीप की बात से प्रभावित उनके प्रिंसिपल चुन्नी लाल ने तत्काल घोषणा कर दी कि वह आकाश को इंटर की पढ़ाई का स्टडी मटेरियल निःशुल्क उपलब्ध कराएंगे। उसके साथ ही उसे विद्यालय में किसी भी अध्यापक से किसी भी समय सराय अकिल से चार थाना कोखराज से चार थाना मोहब्बतपुर पड़न्ता से दो कुल 15 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर चालान च्यायालय कर दिया है। उनके विद्यालय में पहली बार किसी बच्चे से डिस्टिक के टॉप कर विद्यालय और शिक्षकों का नाम रोशन किया है। पिता उदय भान ने बताया, उन्होंने अपने बेटे का नाम आकाश दीप रख कर कोई गलती नहीं की। आज उसने अपने नाम के अर्थ को सार्थक कर दिया है। वह बेटे के लिए प्रोफेसर जैसा सम्मानित भवियका का सपना सहोए थे। लेकिन आज उनके प्रतिभा की निखारी हुई कि बेटा इंजीनियर बनाना चाहता है अब बेटे का सपना पूरा करना उनका प्रमुख सपना है। जिसके लिए अब वह दोगुनी ताकत से मेहनत करेंगे।

# अग्निपथ योजना को लेकर शान्ति व्यवस्था बनाए रखने हेतु बैठक

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक के निर्देशन थाना सराय अकिल द्वारा अग्निपथ योजना के संदर्भ में उत्पन्न वर्तमान परिस्थितियों के परिपेक्ष्य में समन्वय, शांति एवं कानून व्यवस्था बनाए रखने हेतु सेवानिवृत्त सैन्य/पुलिस कर्मचारीगणों के साथ बैठक की गयी व आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

# पुलिस ने किया पैदल गस्त

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में जिले के संपूर्ण थानेद्वारा द्वारा अपने-अपने थाना क्षेत्र में पुलिस बल द्वारा शांति व कानून-व्यवस्था बनाये रखने हेतु थाना क्षेत्र के प्रमुख चौराहों व अन्य सामाजिक स्थानों पर पैदल गस्त किया गया।

# महिला सशक्तिकरण के बारे में जागरूक किया

कौशाम्बी। मिशन शक्ति के तहत जिले के संपूर्ण थाने के अलग-अलग एण्टी रोमियो पुलिस टीम द्वारा अपने-अपने थाना क्षेत्र में भ्रमण कर महिलाओं बालिकाओं से मिलकर वार्ता कर महिला सशक्तिकरण के बारे में जागरूक किया गया साथ ही पैपलेट बाँटकर महत्वपूर्ण हेल्पलाइन नम्बरों की जानकारी दी गयी।

# चोरों ने कंप्यूटर सहित लाखों के उपकरणों को किया पार

### अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। करारी थाना क्षेत्र के पारा हसनपुर गांव में विद्यालय में बने ग्राम पंचायत के पंचायत सहायक भवन का ताला तोड़कर चोरों ने कश्म में रखे कंप्यूटर सहित अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को पार कर दिया। सुबह विद्यालय पहुंचने पर ग्रामीणों ने ताला टूटा देखा उन्होंने इस मामले की जानकारी पंचायत सहायक को दिया, घटना के बाद से गांव में हड़कंप मचा हुआ है पुलिस को दिए गए शिकायती पत्र में गांव की प्रधान सुवर सिंह की पत्नी सरोजा देवी ने बताया कि सुबह ग्रामीणों ने बताया कि विद्यालय में बने पंचायत सहायक कार्यालय का चोरों ने ताला तोड़कर चोरी कर लिया है

# ग्राम पंचायतों में लगे कंप्यूटर की सुरक्षा बड़ी जिम्मेदारी

कौशाम्बी। सरकार ने जिले भर में सभी ग्राम पंचायतों को ग्राम पंचायत में आम लोगों की कार्यों में तेजी लाने के लिए कंप्यूटर सहायक की नियुक्ति की है। जिनको काम करने के लिए हर ग्राम सभा में कंप्यूटर लगाए गए हैं। जिनकी कीमत लाखों में बताई जा रही है। पूर्व में भी प्राथमिक विद्यालयों में गैस सिलेंडरों की चोरी आम रही है। ऐसे में अब इन मूल्यवान कंप्यूटर की सुरक्षा पुलिस के लिए बड़ी जिम्मेदारी साबित होने वाली है।

# बड़ी साजिश की आ रही बू...

कंप्यूटर चोरी के मामले में किसी साजिश से इनकार नहीं किया जा सकता है पहले तो तमाम ग्राम पंचायतों ने बजट निकाल लिया था लेकिन कंप्यूटर नहीं खरीदा था जिसकी शिकायत डीपीआरओ से हुई थी पहले ही कंप्यूटर खरीद योजना में योजना से जुड़े लोगों की बदनीयती सामने आई थी दबाव के बाद खरीदे गए कंप्यूटर में जिम्मेदार को ईमानदार कैसे कहा जा सकता है योजना से जुड़े लोग इस चोरी की घटना में पूरी तरह से संदिग्ध है।

जिसके बाद वह घटनास्थल पर पहुंची तो देखा कि कक्ष से कंप्यूटर, कैमरा बाँस, के साथ लगे सीसीटीवी, बैटरी व सोलर

पैनल गायब है। मामले में प्रधान ने थाना पुलिस को लिखित तहरीर दे दिया है खबर लिखे जाने तक मामला पंजीकृत नहीं हो सका।





### संपादकीय

## जनमत से बने नीति

जनतंत्र में जनमत का बड़ा महत्व है। सरकारी नीति, योजनाओं और कानूनों के निर्माण के पूर्व जनता के पक्ष को जान लिया जाना चाहिए। तकनीकी के इस दौर में जनमत को जानना अधिक मुश्किल कार्य भी नहीं है। केंद्र सरकार द्वारा सेना में भर्ती की अग्निपथ योजना को लागू करते ही उसके व्यापक विरोध से देश जल उठा। इससे पूर्व तीन कृषि कानूनों के बाद इस कानून से नाराज किसानों ने आंदोलन किया। बेहद लम्बे चले आंदोलन के बाद केंद्र सरकार द्वारा कानून को वापिस लिए जाने की घोषणा की गई। 14 जून को केंद्र सरकार द्वारा सेना की तीनों शाखाओं थल, जल और वायु सेनाओं में युवाओं की भर्ती के लिए अग्निपथ भर्ती योजना का ऐलान किया। इस योजना के तहत जवानों को सिर्फ 4 साल के लिए सेना में सेवा देना होगी। इस योजना में भर्ती हुए युवाओं अग्निवीर कहा जाएगा। इस घोषणा के बाद देश भर में व्यापक पैमाने पर हिंसा फैल गयी। आखिर ऐसी क्या व्यवस्था की जाए जिससे योजनाओं, नीतियों, और कानूनों के निर्माण के बाद उसे जनता द्वारा सहर्ष रूप से स्वीकार लिया जाए। एक अच्छी और बेहतर नीति तैयार हों सके जो राष्ट्रीय इच्छा का प्रतिनिधित्व कर सके। इसका एक तरीका नीति, योजना या कानून के निर्माण के पूर्व जनमत संग्रह किया जाना हो सकता है। जनता की राय से निर्मित कानून, नीति या योजनाएं जनता को सहर्ष स्वीकार होंगी और राष्ट्र हिंसा से भी बच सकेगा। जब तकनीकी साधन सीमित होंगे थे, तब राज्यों में विधानसभा सदस्य और केंद्र में संसद सदस्य जनमत का प्रतिनिधित्व करते थे। नीतिगत रूप से यह अभी भी सच है कि नीति निर्माण इनके द्वारा ही किया जाता है, जिसे जनमत कहा जाता है। किंतु अब जबकि तकनीकी साधन विकसित हो गए हैं। किसी भी विषय पर जनता की राय को आसानी से और निश्चित समय अवधि में जाना जा सकता है। इन परिस्थितियों में सरकार को जनता की राय अनिवार्य रूप से जान लेना चाहिए। राष्ट्र ने तीन कृषि कानून और अब अग्निपथ योजना को लेकर राष्ट्रव्यापी विरोध आगजनी, पथराव और बमबाज हिंसा को देखा है। सेना में भर्ती की अग्निपथ योजना की घोषणा होंते ही बिहार से शुरू हुआ छात्रों का विरोध देश भर में फैल गया। बिहार में भारी हिंसा, आगजनी, तोड़फोड़ और पथरावबाजी की घटना घटित हुई। करीब 12 से अधिक ट्रेनों में आग लगा दी गयी। बिहार से शुरू हुआ अग्निपथ योजना का विरोध यूपी, राजस्थान सहित अन्य राज्यों में फैल गया। व्यापक पैमाने पर जारी हिंसा में राष्ट्रीय सम्पत्ति का बड़ा नुकसान हो रहा है। आक्रोशित युवाओं को यह ध्यान रखना चाहिए कि हिंसा और आगजनी से किसी भी विषय का निराकरण सम्भव नहीं है। किसी विषय पर विरोध, नाराजी और मतभिन्नता सम्भव है। किंतु राष्ट्रीय संपत्ति को क्षति पहुंचाना जघन्य और अक्षय्य अपराध है। विरोध, मतभिन्नता को प्रदर्शित करने के प्रजातांत्रिक तरीके हैं। जिनका इस्तेमाल कर सरकार के फैसलों का विरोध किया जा सकता है। युवाओं द्वारा अचानक आक्रोशित होकर राष्ट्रीय सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाने की कार्यवाही को अंजाम देना बेहद शर्मनाक और निंदनीय कृत्य है। छात्रों, युवाओं को अपने गुस्से पर काबू कर राष्ट्रीय सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाने से बचना चाहिए। अब सवाल यह उठता है कि सरकार योजनाओं, नीतियों और कानूनों के निर्माण के पूर्व जनमत का संग्रह क्यों नहीं करती है ? अग्निवीर योजना के बाद सोशल मीडिया पर एक लिंक जोड़ने के समर्थन में चलाई जा रही है। जिसमें यह बताया जा रहा है कि मैं अग्निपथ योजना का समर्थक हूँ। यह लिंक योजना के समर्थकों द्वारा जनता का मानस तैयार करने हेतु चलाई जा रही है।

## आतंकवाद का खुला समर्थन करता है चीन

डॉ. वेद प्रताप

इधर ब्रिक्स का शिखर सम्मेलन होनेवाला है, जिसमें चीन और भारत के नेता आतंकवाद के खिलाफ संयुक्त रणनीति बनाएंगे और उधर चीन ने पाकिस्तान के आतंकवादी अब्दुल रहमान मक्की को बड़ी राहत दिला दी है। अमेरिका और भारत ने मिलकर मक्की का नाम आतंकवादियों की विश्व सूची में डलवाने का प्रस्ताव किया था, लेकिन चीन ने सुरक्षा परिषद के सदस्य होने के नाते अपना अड़ंगा लगा दिया। अब यह काम अगले छह माह तक के लिए टल गया है। यदि चीन अड़ंगा नहीं लगाता तो मक्की पर भी वैसे ही अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंध लग जाते, जैसे कि जैश-ए-मुहम्मद के मुखिया मसूद अजहर पर लगे हैं। उसके मामले में भी चीन ने अड़ंगा लगाने की कोशिश की थी। समझ में नहीं आता कि एक तरफ तो चीन आतंकवाद को जड़मूल से उखाड़ने की घोषणा करता रहता है लेकिन दूसरी तरफ वह आतंकवादियों की पीठ टोकता रहता है। जिन आतंकवादियों के खिलाफ पाकिस्तान सरकार ने काफी सख्त कदम उठाए हैं, उनकी हिमायत चीन अंतरराष्ट्रीय मंचों पर क्यों करना चाहता है ? क्या इसे वह पाकिस्तान के साथ अपनी हृदयस्पाती दोस्ती का प्रमाण मानता है ? खुद पाकिस्तान की सरकारें इन आतंकवादियों से तंग आ चुकी हैं। इन्होंने पाकिस्तान के आम नागरिकों की जिंदगी तबाह कर रखी है। ये उंडे के जोर पर पैसे उमाते हैं। ये कानून कार्यों की परवाह नहीं करते हैं। पाकिस्तान की सरकारें इन्हें सीखियों के पीछे भी डाल देती हैं लेकिन फिर भी चीन इनकी तरफदारी क्यों करता है ? इससे चीन को क्या फायदा है ? चीन को बच यही फायदा है कि ये आतंकवादी भारत को नुकसान पहुंचाते हैं। यानी भारत का नुकसान का काम का फायदा है। चीन की यह सोच किसी दिन उसके लिए बहुत घातक सिद्ध हो सकती है। उसे इस बात का शापद अंदाज नहीं है कि ये आतंकवादी किसी के सगे नहीं होते। ये कभी भी चीन के उद्गार मुसलमानों की पीठ टोककर चीन की छाती पर सवार हो सकते हैं। यदि चीन पाकिस्तान के आतंकवादियों की तरफदारी इसलिए करता है कि वे भारत में आतंकवाद फैलाते हैं तो उसे यह पता होना चाहिए कि इन आतंकवादियों के चलते पाकिस्तान को छवि सारी दुनिया में चौपट हो गई है। पाकिस्तान के सभ्य और सज्जन नागरिकों को भी सारी दुनिया में संदेह की नजर से देखा जाने लगा है।

## वर्षों तक चुकानी होगी हिंसा की कीमत

डॉ. अनिल कुमार निगम  
केंद्र सरकार की युवाओं के लिए सेना में भर्ती की अग्निपथ योजना को लेकर देश के विभिन्न हिस्सों में हिंसक प्रदर्शन और राष्ट्रीय संपत्ति को क्षति पहुंचाए जाने से देश के विकास को गंभीर क्षति पहुंची है। युवाओं को जो हाथ राष्ट्र व समाज के निर्माण के लिए उठने चाहिए, वे हाथ राष्ट्र की संपत्ति को जलाने व नष्ट करने के लिए उठे हैं। युवाओं को समझना चाहिए कि वे बसों, ट्रेनों और कार्यालयों को नहीं जला रहे बल्कि अपने घर की संपत्ति को आग के हवाले कर रहे हैं। अगर यह कहा जाए कि वे जिस डाल पर बैठे हैं, उसी को काट रहे हैं, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। देश को इसकी कीमत कई वर्षों तक चुकानी पड़ेगी। युवाओं को इस और ध्यान देने की जरूरत है कि कुछ समाज एवं राष्ट्र विरोधी तत्व सोशल मीडिया के माध्यम से अग्निपथ

योजना की गलत एवं भ्रामक व्याख्या कर उनके दिग्भ्रमित कर रहे हैं। भारतीय सशस्त्र बलों में भर्ती से संबंधित अग्निपथ योजना में चयनित उम्मीदवारों को चार साल की अवधि के लिए थल सेना, वायु सेना और नौसेना में अग्निवीर के रूप में काम करने का मौका मिलेगा। सेना में चार साल की अवधि पूरी होने पर वे अग्निवीर एक अनुशासित और एवं कुशल श्रमशक्ति के रूप में विभिन्न क्षेत्रों में करियर बन सकेगें। इन्हें अग्निवीरों में 25 फीसद लोगों को सेना में नियमित कर दिया जाएगा। शेष युवाओं को पुलिस, सीमा सुरक्षा बल सहित विभिन्न सिविल नौकरियों की भर्ती में सरकार प्राथमिकता देगी। यहां तक कि कॉर्पोरेट सेक्टर की भर्ती में अग्निवीर का कार्य कर चुके युवाओं को वरीयता देने की बात कही गई है। वास्तविकता तो यह है कि यह योजना देश की सेवा करने के इच्छुक भारतीय

युवाओं को कम अवधि के लिए सशस्त्र बलों में भर्ती होने का अवसर प्रदान करती है। साथ ही यह सशस्त्र बलों के युवाओं के प्रोफाइल को भी बेहतर करती है। इसके तहत युवाओं को कम अवधि के लिए सेना में कार्य करने का अवसर प्रदान करने की परिकल्पना की गई है। इस योजना के माध्यम से सशस्त्र बलों में युवाओं और अनुभव की कमी के बीच एक अच्छा संतुलन स्थापित होगा और इससे देश के लिए एक सशक्त सेना तैयार हो जाएगी। अग्निपथ योजना के तहत प्रारंभिक तौर पर सेना में कुल भर्ती प्रक्रिया की मात्र तीन फीसद भर्ती की जाएगी जबकि 97 फीसदी भर्ती पूर्ववत् जारी जाएगा लेकिन इस योजना के तहत कुल सेना बल का 50 फीसद से ज्यादा नहीं होगा। आंदोलित और भ्रमित युवाओं को यह समझने की आवश्यकता है कि इस

योजना के माध्यम से सेना में रोजगार के अवसर नहीं खत्म किए जा रहे बल्कि सशस्त्र बलों को कुशल श्रम के लिए तैयार कर उनके लिए रोजगार की और अधिक संभावनाएं उत्पन्न की जा रही हैं। अग्निपथ योजना का सबसे बड़ा लाभ यह है कि देश की सेवा की आकांक्षा रखने वाले लाखों युवा महिला और पुरुषों को सेना में भर्ती होकर राष्ट्र निर्माण में योगदान करने का सुअवसर मिल सकेगा। सशस्त्र बलों में शामिल होने से न केवल देश की सेनाएं सशक्त होंगी बल्कि इससे युवाओं में अनुशासन, जोश, प्रेरणा, कार्य कुशलता, प्रतिबद्धता, टीम लीडरशिप और देश के प्रति समर्पण जैसे अनेक गुण विकसित होंगे। और जब ये युवा चार साल बाद सिविलियन बन समाज के विभिन्न सेक्टरों में काम करेंगे तो इससे समाज मजबूत होगा और अगर समाज मजबूत होगा तो निस्संदेह यह भारत को

एक समृद्ध और सशक्त राष्ट्र बनाएगा। इसीलिए आवश्यक है कि युवा इस योजना को समझें, किसी के बहकावे में आकर राष्ट्रीय संपत्ति को क्षति न पहुंचाएं। वे हिंसा का मार्ग छोड़कर समाज और राष्ट्र को सशक्त बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करें, इसी में हम सब का हित निहित है। इस योजना से सेना की संचालन क्षमता में वृद्धि होगी। एक युवा, जोकि कम घबराहट के साथ लड़ाई में मैदान में उतरने की दृष्टि से अधिक योग्य होता है, से लौटने की वजह से यह उम्मीद की जाती है कि इन कर्मियों को जोखिम लेने की क्षमता अधिक होगी। प्रौद्योगिकी के समावेश और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सुधार के साथ, सशस्त्र बल यह सुनिश्चित करेंगे कि इस योजना के तहत शामिल किए गए कर्मियों के पास वही कौशल हो, जो कि संचालनात्मक चुनौतियों से निपटने के लिए जरूरी है।

डॉ. सुरेश कुमार  
हम उनसे हर साल दो करोड़ नौकरी मांग रहे थे। नौकरी मांगने वाले की डिग्रियाँ घर में पड़ी-पड़ी जब सड़ने लगती हैं तब उन्हें सरकारी वार्दों की वड़ी याद हो आती है। सरकार भी हाथी के दाँत के समान अपने मेनिफेस्टो को कचरे के ढेर में डालकर अपने भीतरी अजेंडे को अमल में लाती है। निकम्मे जब सरकार बनाते हैं तो सबसे पहले निकम्में की बैंड बजाते हैं। सभी को नौकरी देना मतलब सभी युवाओं को तिलोत्तली देने के समान होता है। इसलिए बेरोजगारों को नौकरी के अंगूर दिखा-दिखाकर पाँच साल गुजराने के लिए सरकार को सरकार नहीं अंगूरीबाई बनना पड़ता है। अंगूरीबाई निकम्में को बहकाने के लिए अलग-अलग किस्म के अंगूर ले आती है। एक दिन अंगूरीबाई ने एक निकम्मे से पूछ लिया कि तुम किस तरह के अंगूर चाहते हो। तब उसने कहा झर्र झर्र मैंम साहब! समाचार पत्र में फर्नाँ नौकरी का अंगूर देखकर आवेदन किया था। मैं स्नातकोत्तर हूँ आप मुझसे उस स्तर का

सवाल पूछ सकती हैं। आप जो चाहे वह पूछ सकती हैं। हाँ यदि मैं जवाब न दे सकूँ तो आप मुझे खुशी-खुशी बाहर का रास्ता दिखा सकती हैं। मैं चूँ तक न करूँगा। किंतु आप बेमतलब के सवाल जैसे कि भोपाल में समुद्र क्यों नहीं है ? सलमान खान की शादी क्यों नहीं हुई ? मुग्गी पहले या अंडा पहले ? पूछकर मेरा अपमान मत कीजिए। हाँ अगर अपने किसी को पहले ही चुन लिया है और यह साक्षात्कार प्रक्रिया केवल दिखावे के लिए है, तो मुझे सीधे-सीधे मला कर दीजिए। इस तरह किसी का मजाक न बनाएँ। किसी ने बताया कि अंगूरीबाई खास लोगों को ही अंगूर खिलाते हैं चक्कर में रहती है। जब इसका पता निकम्मे को लगा तो उसने कहा - हरेलू हरेलू के युवा एक हाथ में पढाई की डिग्री और दूसरे हाथ में अलग-अलग सर्रेम का भार लिए घूमते हैं। निकम्मे तो निकम्मे होते हैं। इसका न कोई धर्म होता है, न जात-पात। न भाषा होती है न कोई प्रांत। इसके लिए उत्तर क्या दक्षिण क्या। पूरव क्या पश्चिम क्या।

## अंगूरीबाई हँस पड़ी

# इंसान से इंसान को जोड़ने के लिये योग

ललित गर्ग  
अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का 8वाँ उत्सव भारत के साथ-साथ दुनियाभर के अधिकांश देशों में 21 जून 2022 को नई थीम- योगा फॉर मैनिटी के साथ मनाया जायेगा। इसका अर्थ है मानवता के लिए योग। इंसान से इंसान को जोड़ने के लिये योग को माध्यम बनाया जा रहा है। 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संयुक्त राष्ट्र संघ की बैठक में योग दिवस मनाने का प्रस्ताव रखा था जिसके बाद 11 दिसंबर 2014 के दिन प्रतिवर्ष 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने की घोषणा हुई। योग को महत्व को लेकर भारत के प्रयासों के चलते दुनियाभर के देशों ने विश्व स्तर योग दिवस मनाना शुरू किया। भारतीय योग एवं ध्यान के माध्यम से भारत दुनिया में गुरु का दर्जा एवं एक अनूठी पहचान हासिल करने में सफल हो रहा है। इसीलिये समूची दुनिया के लिये अंतरराष्ट्रीय योग दिवस स्वीकार्य हुआ है। आयुष मंत्रालय इस वर्ष एक नई पहल करते हुए गाजियन रिग नाम का एक इन्गेवेटिव प्रोग्राम करने जा रहा है जिसमें अलग-अलग देश के संदर्भ में सूर्य की गति की भाँति लोग योगा करते हुए दिखेंगे और पूर्व से पश्चिम की ओर बढ़ते हुए नजर आएंगे।

योग दिवस की अंतरराष्ट्रीय स्वीकार्यता के लिये प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सुझबूझ एवं प्रयासों से अपूर्व वातावरण बना है। आज महामारी, महायुद्ध, आतंकवाद, बढ़ती महंगाई, गरीबी, बेरोजगारी के कारण जीवन का हर क्षेत्र समस्याओं से घिरा हुआ है, जिसके कारण हर व्यक्ति एवं परिवार अपने अंतर्द्वंद्व और मानसिक उत्थल-पुथल की जिंदगी जी रहा है। यमन्युष्य के सम्पूर्ण जीवन का संकट खड़ा है। मानसिक संतुलन अस्त-व्यस्त हो रहा है। मानसिक संतुलन का अर्थ है विभिन्न परिस्थितियों में तालमेल स्थापित करना, जिसका सशक्त एवं प्रभावी माध्यम योग ही है। योग एक ऐसी तकनीक है, एक विज्ञान है जो हमारे शरीर, मन, विचार एवं आत्मा को स्वस्थ करती है। यह हमारे तनाव एवं कुंठा को दूर करती है। जब हम योग करते हैं, श्वासों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, प्राणायाम और कसरत करते हैं तो यह सब हमारे शरीर और मन को भीतर से खुश और प्रफुल्लित रहने के लिये प्रेरित करती है। योग जीवन की अस्त-व्यस्तता एवं तनावों से मुक्ति का सशक्त

## अग्निपथ से निकले अग्निवीर देश तो नहीं जलाएंगे

संजय तिवारी  
भारत की भावी पीढ़ी को सैन्य सुरक्षा में प्रशिक्षित कर अनुशासित नागरिक बनाने की प्रक्रिया की घोषणा उन्हें रास नहीं आ रही। युवा अनुशासित और आत्मनिर्भर बन जाएंगे तो राजनीतिक चौपालों में भीड़ नहीं मिलेगी। सरकारों को अस्थिर नहीं किया जा सकेगा। शत्रु शक्तियों के स्लीपर सेल काम नहीं कर पाएंगे। बड़ी कठिन डगर हो जाएगी भारत को कमजोर करने की। जाति-धर्म की राजनीति नहीं चल पाएगी। गुटिकरण नहीं चलेगा। असंख्य राजनीतिक दुकानें बंद हो जाएंगी। राजनीतिक रोजगार ही खत्म कर देगी मोदी सरकार।अजीब दृश्य है। इस उम्र के बच्चों को कभी कोचिंग वाले, कभी भर्ती वाले और बाजारों में दुकानों की तरह डिग्री बांटने की खुली दुकानें खुलेआम लूट रही हैं। खेत वेंचकर अभिभावक उमर पर पैसे खर्च कर रहा है। ऐसे दुर्दिन से युवा संपदा को बाहर निकालने की एक अतिमहत्वाकांक्षी योजना सरकार जब सामने लेकर आ गई तो देश को आग में झोंक दिया गया। यह किसी को समझ नहीं आ रहा कि आखिर इस योजना का विरोध करने का कारण क्या है। क्योंकि कोई रूटीन भर्ती प्रक्रिया नहीं करती है। एक नई योजना लाई गई है जिसके अग्निगत लाभ हैं। यह कोई नौकरी नहीं है। चार वर्ष की ऐसी योजना है जिसमें भारतीय सेना में रह कर नौजवान बहुत कुछ सीखेंगे और फिर समाज

में आकर अपना योगदान देंगे। अनगिनत सुविधाओं के साथ अनेक रास्ते खोले गए हैं। फिर भी विरोध। ठीक वैसे ही जैसे नागरिकता कानून लागू होने के बाद हुआ। इस विरोध और विरोध के टूलकिट लगभग वही है। पाकिस्तान के लोग भी इस विरोध को देख कर दंग हैं। वहाँ अलग प्रकार की बहस चल रही है। भारत में ट्रेन, बस, भाजपा के कार्यालय और बुलडोजर फूँके दिए गए हैं। इनमें बुलडोजर के फूँकने पर ध्यान दीजिए। बुलडोजर यहाँ एक प्रतीक बन चुका है भारत को विरोधी तत्वों पर अंकुश लगाने का योगी आदित्यनाथ सरकार का मॉडल। यह बुलडोजर योगी के पिछले कार्यकाल से ही चर्चा में है। अब सबको समझ में आ चुका होगा कि ट्रेन आदि के साथ बुलडोजर में आग कौन और क्यों लगा रहा है। दरअसल, अग्निपथ योजना की टार्डिमेंग कुछ ऐसी हो

## वर्षों तक चुकानी होगी हिंसा की कीमत

डॉ. अनिल कुमार निगम  
केंद्र सरकार की युवाओं के लिए सेना में भर्ती की अग्निपथ योजना को लेकर देश के विभिन्न हिस्सों में हिंसक प्रदर्शन और राष्ट्रीय संपत्ति को क्षति पहुंचाए जाने से देश के विकास को गंभीर क्षति पहुंची है। युवाओं को जो हाथ राष्ट्र व समाज के निर्माण के लिए उठने चाहिए, वे हाथ राष्ट्र की संपत्ति को जलाने व नष्ट करने के लिए उठे हैं। युवाओं को समझना चाहिए कि वे बसों, ट्रेनों और कार्यालयों को नहीं जला रहे बल्कि अपने घर की संपत्ति को आग के हवाले कर रहे हैं। अगर यह कहा जाए कि वे जिस डाल पर बैठे हैं, उसी को काट रहे हैं, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। देश को इसकी कीमत कई वर्षों तक चुकानी पड़ेगी। युवाओं को इस और ध्यान देने की जरूरत है कि कुछ समाज एवं राष्ट्र विरोधी तत्व सोशल मीडिया के माध्यम से अग्निपथ

योजना की गलत एवं भ्रामक व्याख्या कर उनके दिग्भ्रमित कर रहे हैं। भारतीय सशस्त्र बलों में भर्ती से संबंधित अग्निपथ योजना में चयनित उम्मीदवारों को चार साल की अवधि के लिए थल सेना, वायु सेना और नौसेना में अग्निवीर के रूप में काम करने का मौका मिलेगा। सेना में चार साल की अवधि पूरी होने पर वे अग्निवीर एक अनुशासित और एवं कुशल श्रमशक्ति के रूप में विभिन्न क्षेत्रों में करियर बन सकेगें। इन्हें अग्निवीरों में 25 फीसद लोगों को सेना में नियमित कर दिया जाएगा। शेष युवाओं को पुलिस, सीमा सुरक्षा बल सहित विभिन्न सिविल नौकरियों की भर्ती में सरकार प्राथमिकता देगी। यहां तक कि कॉर्पोरेट सेक्टर की भर्ती में अग्निवीर का कार्य कर चुके युवाओं को वरीयता देने की बात कही गई है। वास्तविकता तो यह है कि यह योजना देश की सेवा करने के इच्छुक भारतीय

## अग्निपथ से निकले अग्निवीर देश तो नहीं जलाएंगे

संजय तिवारी  
भारत की भावी पीढ़ी को सैन्य सुरक्षा में प्रशिक्षित कर अनुशासित नागरिक बनाने की प्रक्रिया की घोषणा उन्हें रास नहीं आ रही। युवा अनुशासित और आत्मनिर्भर बन जाएंगे तो राजनीतिक चौपालों में भीड़ नहीं मिलेगी। सरकारों को अस्थिर नहीं किया जा सकेगा। शत्रु शक्तियों के स्लीपर सेल काम नहीं कर पाएंगे। बड़ी कठिन डगर हो जाएगी भारत को कमजोर करने की। जाति-धर्म की राजनीति नहीं चल पाएगी। गुटिकरण नहीं चलेगा। असंख्य राजनीतिक दुकानें बंद हो जाएंगी। राजनीतिक रोजगार ही खत्म कर देगी मोदी सरकार।अजीब दृश्य है। इस उम्र के बच्चों को कभी कोचिंग वाले, कभी भर्ती वाले और बाजारों में दुकानों की तरह डिग्री बांटने की खुली दुकानें खुलेआम लूट रही हैं। खेत वेंचकर अभिभावक उमर पर पैसे खर्च कर रहा है। ऐसे दुर्दिन से युवा संपदा को बाहर निकालने की एक अतिमहत्वाकांक्षी योजना सरकार जब सामने लेकर आ गई तो देश को आग में झोंक दिया गया। यह किसी को समझ नहीं आ रहा कि आखिर इस योजना का विरोध करने का कारण क्या है। क्योंकि कोई रूटीन भर्ती प्रक्रिया नहीं करती है। एक नई योजना लाई गई है जिसके अग्निगत लाभ हैं। यह कोई नौकरी नहीं है। चार वर्ष की ऐसी योजना है जिसमें भारतीय सेना में रह कर नौजवान बहुत कुछ सीखेंगे और फिर समाज

में आकर अपना योगदान देंगे। अनगिनत सुविधाओं के साथ अनेक रास्ते खोले गए हैं। फिर भी विरोध। ठीक वैसे ही जैसे नागरिकता कानून लागू होने के बाद हुआ। इस विरोध और विरोध के टूलकिट लगभग वही है। पाकिस्तान के लोग भी इस विरोध को देख कर दंग हैं। वहाँ अलग प्रकार की बहस चल रही है। भारत में ट्रेन, बस, भाजपा के कार्यालय और बुलडोजर फूँके दिए गए हैं। इनमें बुलडोजर के फूँकने पर ध्यान दीजिए। बुलडोजर यहाँ एक प्रतीक बन चुका है भारत को विरोधी तत्वों पर अंकुश लगाने का योगी आदित्यनाथ सरकार का मॉडल। यह बुलडोजर योगी के पिछले कार्यकाल से ही चर्चा में है। अब सबको समझ में आ चुका होगा कि ट्रेन आदि के साथ बुलडोजर में आग कौन और क्यों लगा रहा है। दरअसल, अग्निपथ योजना की टार्डिमेंग कुछ ऐसी हो

## अग्निपथ से निकले अग्निवीर देश तो नहीं जलाएंगे

डॉ. अनिल कुमार निगम  
केंद्र सरकार की युवाओं के लिए सेना में भर्ती की अग्निपथ योजना को लेकर देश के विभिन्न हिस्सों में हिंसक प्रदर्शन और राष्ट्रीय संपत्ति को क्षति पहुंचाए जाने से देश के विकास को गंभीर क्षति पहुंची है। युवाओं को जो हाथ राष्ट्र व समाज के निर्माण के लिए उठने चाहिए, वे हाथ राष्ट्र की संपत्ति को जलाने व नष्ट करने के लिए उठे हैं। युवाओं को समझना चाहिए कि वे बसों, ट्रेनों और कार्यालयों को नहीं जला रहे बल्कि अपने घर की संपत्ति को आग के हवाले कर रहे हैं। अगर यह कहा जाए कि वे जिस डाल पर बैठे हैं, उसी को काट रहे हैं, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। देश को इसकी कीमत कई वर्षों तक चुकानी पड़ेगी। युवाओं को इस और ध्यान देने की जरूरत है कि कुछ समाज एवं राष्ट्र विरोधी तत्व सोशल मीडिया के माध्यम से अग्निपथ

योजना की गलत एवं भ्रामक व्याख्या कर उनके दिग्भ्रमित कर रहे हैं। भारतीय सशस्त्र बलों में भर्ती से संबंधित अग्निपथ योजना में चयनित उम्मीदवारों को चार साल की अवधि के लिए थल सेना, वायु सेना और नौसेना में अग्निवीर के रूप में काम करने का मौका मिलेगा। सेना में चार साल की अवधि पूरी होने पर वे अग्निवीर एक अनुशासित और एवं कुशल श्रमशक्ति के रूप में विभिन्न क्षेत्रों में करियर बन सकेगें। इन्हें अग्निवीरों में 25 फीसद लोगों को सेना में नियमित कर दिया जाएगा। शेष युवाओं को पुलिस, सीमा सुरक्षा बल सहित विभिन्न सिविल नौकरियों की भर्ती में सरकार प्राथमिकता देगी। यहां तक कि कॉर्पोरेट सेक्टर की भर्ती में अग्निवीर का कार्य कर चुके युवाओं को वरीयता देने की बात कही गई है। वास्तविकता तो यह है कि यह योजना देश की सेवा करने के इच्छुक भारतीय

## अग्निपथ से निकले अग्निवीर देश तो नहीं जलाएंगे

संजय तिवारी  
भारत की भावी पीढ़ी को सैन्य सुरक्षा में प्रशिक्षित कर अनुशासित नागरिक बनाने की प्रक्रिया की घोषणा उन्हें रास नहीं आ रही। युवा अनुशासित और आत्मनिर्भर बन जाएंगे तो राजनीतिक चौपालों में भीड़ नहीं मिलेगी। सरकारों को अस्थिर नहीं किया जा सकेगा। शत्रु शक्तियों के स्लीपर सेल काम नहीं कर पाएंगे। बड़ी कठिन डगर हो जाएगी भारत को कमजोर करने की। जाति-धर्म की राजनीति नहीं चल पाएगी। गुटिकरण नहीं चलेगा। असंख्य राजनीतिक दुकानें बंद हो जाएंगी। राजनीतिक रोजगार ही खत्म कर देगी मोदी सरकार।अजीब दृश्य है। इस उम्र के बच्चों को कभी कोचिंग वाले, कभी भर्ती वाले और बाजारों में दुकानों की तरह डिग्री बांटने की खुली दुकानें खुलेआम लूट रही हैं। खेत वेंचकर अभिभावक उमर पर पैसे खर्च कर रहा है। ऐसे दुर्दिन से युवा संपदा को बाहर निकालने की एक अतिमहत्वाकांक्षी योजना सरकार जब सामने लेकर आ गई तो देश को आग में झोंक दिया गया। यह किसी को समझ नहीं आ रहा कि आखिर इस योजना का विरोध करने का कारण क्या है। क्योंकि कोई रूटीन भर्ती प्रक्रिया नहीं करती है। एक नई योजना लाई गई है जिसके अग्निगत लाभ हैं। यह कोई नौकरी नहीं है। चार वर्ष की ऐसी योजना है जिसमें भारतीय सेना में रह कर नौजवान बहुत कुछ सीखेंगे और फिर समाज

में आकर अपना योगदान देंगे। अनगिनत सुविधाओं के साथ अनेक रास्ते खोले गए हैं। फिर भी विरोध। ठीक वैसे ही जैसे नागरिकता कानून लागू होने के बाद हुआ। इस विरोध और विरोध के टूलकिट लगभग वही है। पाकिस्तान के लोग भी इस विरोध को देख कर दंग हैं। वहाँ अलग प्रकार की बहस चल रही है। भारत में ट्रेन, बस, भाजपा के कार्यालय और बुलडोजर फूँके दिए गए हैं। इनमें बुलडोजर के फूँकने पर ध्यान दीजिए। बुलडोजर यहाँ एक प्रतीक बन चुका है भारत को विरोधी तत्वों पर अंकुश लगाने का योगी आदित्यनाथ सरकार का मॉडल। यह बुलडोजर योगी के पिछले कार्यकाल से ही चर्चा में है। अब सबको समझ में आ चुका होगा कि ट्रेन आदि के साथ बुलडोजर में आग कौन और क्यों लगा रहा है। दरअसल, अग्निपथ योजना की टार्डिमेंग कुछ ऐसी हो

## अग्निपथ से निकले अग्निवीर देश तो नहीं जलाएंगे

डॉ. अनिल कुमार निगम  
केंद्र सरकार की युवाओं के लिए सेना में भर्ती की अग्निपथ योजना को लेकर देश के विभिन्न हिस्सों में हिंसक प्रदर्शन और राष्ट्रीय संपत्ति को क्षति पहुंचाए जाने से देश के विकास को गंभीर क्षति पहुंची है। युवाओं को जो हाथ राष्ट्र व समाज के निर्माण के लिए उठने चाहिए, वे हाथ राष्ट्र की संपत्ति को जलाने व नष्ट करने के लिए उठे हैं। युवाओं को समझना चाहिए कि वे बसों, ट्रेनों और कार्यालयों को नहीं जला रहे बल्कि अपने घर की संपत्ति को आग के हवाले कर रहे हैं। अगर यह कहा जाए कि वे जिस डाल पर बैठे हैं, उसी को काट रहे हैं, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। देश को इसकी कीमत कई वर्षों तक चुकानी पड़ेगी। युवाओं को इस और ध्यान देने की जरूरत है कि कुछ समाज एवं राष्ट्र विरोधी तत्व सोशल मीडिया के माध्यम से अग्निपथ

योजना की गलत एवं भ्रामक व्याख्या कर उनके दिग्भ्रमित कर रहे हैं। भारतीय सशस्त्र बलों में भर्ती से संबंधित अग्निपथ योजना में चयनित उम्मीदवारों को चार साल की अवधि के लिए थल सेना, वायु सेना और नौसेना में अग्निवीर के रूप में काम करने का मौका मिलेगा। सेना में चार साल की अवधि पूरी होने पर वे अग्निवीर एक अनुशासित और एवं कुशल श्रमशक्ति के रूप में विभिन्न क्षेत्रों में करियर बन सकेगें। इन्हें अग्निवीरों में 25 फीसद लोगों को सेना में नियमित कर दिया जाएगा। शेष युवाओं को पुलिस, सीमा सुरक्षा बल सहित विभिन्न सिविल नौकरियों की भर्ती में सरकार प्राथमिकता देगी। यहां तक कि कॉर्पोरेट सेक्टर की भर्ती में अग्निवीर का कार्य कर चुके युवाओं को वरीयता देने की बात कही गई है। वास्तविकता तो यह है कि यह योजना देश की सेवा करने के इच्छुक भारतीय

## अग्निपथ से निकले अग्निवीर देश तो नहीं जलाएंगे

संजय तिवारी  
भारत की भावी पीढ़ी को सैन्य सुरक्षा में प्रशिक्षित कर अनुशासित नागरिक बनाने की प्रक्रिया की घोषणा उन्हें रास नहीं आ रही। युवा अनुशासित और आत्मनिर्भर बन जाएंगे तो राजनीतिक चौपालों में भीड़ नहीं मिलेगी। सरकारों को अस्थिर नहीं किया जा सकेगा। शत्रु शक्तियों के स्लीपर सेल काम नहीं कर पाएंगे। बड़ी कठिन डगर हो जाएगी भारत को कमजोर करने की। जाति-धर्म की राजनीति नहीं चल पाएगी। गुटिकरण नहीं चलेगा। असंख्य राजनीतिक दुकानें बंद हो जाएंगी। राजनीतिक रोजगार ही खत्म कर देगी मोदी सरकार।अजीब दृश्य है। इस उम्र के बच्चों को कभी कोचिंग वाले, कभी भर्ती वाले और बाजारों में दुकानों की तरह डिग्री बांटने की खुली दुकानें खुलेआम लूट रही हैं। खेत वेंचकर अभिभावक उमर पर पैसे खर्च कर रहा है। ऐसे दुर्दिन से युवा संपदा को बाहर निकालने की एक अतिमहत्वाकांक्षी योजना सरकार जब सामने लेकर आ गई तो देश को आग में झोंक दिया गया। यह किसी को समझ नहीं आ रहा कि आखिर इस योजना का विरोध करने का कारण क्या है। क्योंकि कोई रूटीन भर्ती प्रक्रिया नहीं करती है। एक नई योजना लाई गई है जिसके अग्निगत लाभ हैं। यह कोई नौकरी नहीं है। चार वर्ष की ऐसी योजना है जिसमें भारतीय सेना में रह कर नौजवान बहुत कुछ सीखेंगे और फिर समाज

में आकर अपना योगदान देंगे। अनगिनत सुविधाओं के साथ अनेक रास्ते खोले गए हैं। फिर भी विरोध। ठीक वैसे ही जैसे नागरिकता कानून लागू होने के बाद हुआ। इस विरोध और विरोध के टूलकिट लगभग वही है। पाकिस्तान के लोग भी इस विरोध को देख कर दंग हैं। वहाँ अलग प्रकार की बहस चल रही है। भारत में ट्रेन, बस, भाजपा के कार्यालय और बुलडोजर फूँके दिए गए हैं। इनमें बुलडोजर के फूँकने पर ध्यान दीजिए। बुलडोजर यहाँ एक प्रतीक बन चुका है भारत को विरोधी तत्वों पर अंकुश लगाने का योगी आदित्यनाथ सरकार का मॉडल। यह बुलडोजर योगी के पिछले कार्यकाल से ही चर्चा में है। अब सबको समझ में आ चुका होगा कि ट्रेन आदि के साथ बुलडोजर में आग कौन और क्यों लगा रहा है। दरअसल, अग्निपथ योजना की टार्डिमेंग कुछ ऐसी हो

## अग्निपथ से निकले अग्निवीर देश तो नहीं जलाएंगे

डॉ. अनिल कुमार निगम  
केंद्र सरकार की युवाओं के लिए सेना में भर्ती की अग्निपथ योजना को लेकर देश के विभिन्न हिस्सों में हिंसक प्रदर्शन और राष्ट्रीय संपत्ति को क्षति पहुंचाए जाने से देश के विकास को गंभीर क्षति पहुंची है। युवाओं को जो हाथ राष्ट्र व समाज के निर्माण के लिए उठने चाहिए, वे हाथ राष्ट्र की संपत्ति को जलाने व नष्ट करने के लिए उठे हैं। युवाओं को समझना चाहिए कि वे बसों, ट्रेनों और कार्यालयों को नहीं जला रहे बल्कि अपने घर की संपत्ति को आग के हवाले कर रहे हैं। अगर यह कहा जाए कि वे जिस डाल पर बैठे हैं, उसी को काट रहे हैं, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। देश को इसकी कीमत कई वर्षों तक चुकानी पड़ेगी। युवाओं को इस और ध्यान देने की जरूरत है कि कुछ समाज एवं राष्ट्र विरोधी तत्व सोशल मीडिया के माध्यम से अग्निपथ

योजना की गलत एवं भ्रामक व्याख्या कर उनके दिग्भ्रमित कर रहे हैं। भारतीय सशस्त्र बलों में भर्ती से संबंधित अग्निपथ योजना में चयनित उम्मीदवारों को चार साल की अवधि के लिए थल सेना, वायु सेना और नौसेना में अग्निवीर के रूप में काम करने का मौका मिलेगा। सेना में चार साल की अवधि पूरी होने पर वे अग्निवीर एक अनुशासित और एवं कुशल श्रमशक्ति के रूप में विभिन्न क्षेत्रों में करियर बन सकेगें। इन्हें अग्निवीरों में 25 फीसद लोगों को सेना में नियमित कर दिया जाएगा। शेष युवाओं को पुलिस, सीमा सुरक्षा बल सहित विभिन्न सिविल नौकरियों की भर्ती में सरकार प्राथमिकता देगी। यहां तक कि कॉर्पोरेट सेक्टर की भर्ती में अग्निवीर का कार्य कर चुके युवाओं को वरीयता देने की बात कही गई है। वास्तविकता तो यह है कि यह योजना देश की सेवा करने के इच्छुक भारतीय

## अग्निपथ से निकले अग्निवीर देश तो नहीं जलाएंगे

संजय तिवारी  
भारत की भावी पीढ़ी को सैन्य सुरक्षा में प्रशिक्षित कर अनुशासित नागरिक बनाने की प्रक्रिया की घोषणा उन्हें रास नहीं आ रही। युवा अनुशासित और आत्मनिर्भर बन जाएंगे तो राजनीतिक चौपालों में भीड़ नहीं मिलेगी। सरकारों को अस्थिर नहीं किया जा सकेगा। शत्रु शक्तियों के स्लीपर सेल काम नहीं कर पाएंगे। बड़ी कठिन डगर हो जाएगी भारत को कमजोर करने की। जाति-धर्म की राजनीति नहीं चल पाएगी। गुटिकरण नहीं चलेगा। असंख्य राजनीतिक दुकानें बंद हो जाएंगी। राजनीतिक रोजगार ही खत्म कर देगी मोदी सरकार।अजीब दृश्य है। इस उम्र के बच्चों को कभी कोचिंग वाले, कभी भर्ती वाले और बाजारों में दुकानों की तरह डिग्री बांटने की खुली दुकानें खुलेआम लूट रही हैं। खेत वेंचकर अभिभावक उमर पर पैसे खर्च कर रहा है। ऐसे दुर्दिन से युवा संपदा को बाहर निकालने की एक अतिमहत्वाकांक्षी योजना सरकार जब सामने लेकर आ गई तो देश को आग में झोंक दिया गया। यह किसी को समझ नहीं आ रहा कि आखिर इस योजना का विरोध करने का कारण क्या है। क्योंकि कोई रूटीन भर्ती प्रक्रिया नहीं करती है। एक नई योजना लाई गई है जिसके अग्निगत लाभ हैं। यह कोई नौकरी नहीं है। चार वर्ष की ऐसी योजना है जिसमें भारतीय सेना में रह कर नौजवान बहुत कुछ सीखेंगे और फिर समाज

में आकर अपना योगदान देंगे। अनगिनत सुविधाओं के साथ अनेक रास्ते खोले गए हैं। फिर भी विरोध। ठीक वैसे ही जैसे नागरिकता कानून लागू होने के बाद हुआ। इस विरोध और विरोध के टूलकिट लगभग वही है। पाकिस्तान के लोग भी इस वि



## एच एस प्रणय इंडोनेशिया ओपन के सेमीफाइनल में

जकार्ता । भारतीय खिलाड़ी एच एस प्रणय ने अपनी शानदार फॉर्म जारी रखते हुए दुनिया के 13वें नंबर के खिलाड़ी रास्मस गेमेक को सीधे गेम में पराजित कर इंडोनेशिया ओपन सुपर 1000



बैडमिंटन टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। डेनमार्क के खिलाफ निर्णायक पांचवें मुकाबले में गेमेक पर ऐतिहासिक जीत से भारत को थॉमस कप फाइनल में पहुंचाने के एक महीने बाद प्रणय ने एक बार फिर गेमेक के खिलाफ 40 मिनट तक चले क्वार्टरफाइनल में शानदार प्रदर्शन कर 21-14 21-12 से जीत दर्ज की।

दुनिया के 23वें नंबर के खिलाड़ी प्रणय का यह इंडोनेशिया ओपन में दूसरा सेमीफाइनल है। वह 2017 के चरण में भी अंतिम चार में पहुंचे थे। मार्च में स्विस ओपन सुपर 300 फाइनल में पहुंचे प्रणय का सामना अब चीन के झाओ जुन पेंग से होगा। इस मैच से पहले प्रणय और गेमेक के बीच जीत का रिकार्ड 2-2 से बराबरी पर था।

## Coco Gauff बर्लिन ओपन के सेमीफाइनल में

बर्लिन । अमरीका की कोको गॉ पहली बार ग्रासकोर्ट टेनिस सेमीफाइनल में पहुंच गई जिन्होंने बर्लिन ओपन में कैरोलिना व्लिसकोवा को 7.5, 6.4 से हराया। अब उनका सामना ओस



जबाउर से होगा। फ्रेंच ओपन उपविजेता 18 वर्ष की गॉ ने दोनों सेट में पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए पिछले साल की विम्बलडन उपविजेता को हराया। वहीं, चौथी वययता प्राप्त जबाउर ने एलिकसैंड्रा सेस्नोविच को 6.7, 6.2, 6.2 से मात दी। अन्य मैचों में छठी रैंकिंग वाली मारिया सक्कारी ने फ्रेंच ओपन सेमीफाइनल खेलने वाली डारिया कासाकिनो को 6.0, 6.3 से हराया। सक्कारी का सामना अब बेलिंडा बेचिच से होगा जिन्होंने वेरोनिका कुदेरमेतोवा को 3.6, 6.3, 6.3 से हराया।

## रिद्धिमा दिलावरी ने Hero WPGT के 8वें चरण में सत्र की पहली जीत दर्ज की

बेंगलुरु। भारतीय गोल्फर रिद्धिमा दिलावड़ी ने तीसरे दौर में दो बर्डी की शानदार शुरुआत से 72 का कार्ड खेलकर यहां हीरो महिला प्रो गोल्फ टूर के 8वें चरण का खिताब अपने नाम किया।



रिद्धिमा का कुल स्कोर एक अंडर 215 रहा और इस तरह उन्होंने जाह्नवी बख्शी (72), सह अटवाल (72) और प्रणवी उर्स (76) चार शांटी की बढ़त से जीत दर्ज की। इससे रिद्धिमा के लंबे समय से चले आ रहे खिताब का सूखा भी खत्म हुआ। उन्होंने पिछला खिताब 2021 में जनवरी और फिर दिसंबर में जीता था।

## ICC मीडिया अधिकार : वैश्विक संस्था ने 711 मैच के लिए 3 पैकेज निकाले

दुबई। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद आईसीसी अगले 8 साल के चक्र (2024 से शुरू होकर) के लिए अपने वैश्विक टूर्नामेंट के लिए 711 मैच के लिए मीडिया अधिकार निविदा बेचने की प्रक्रिया 20 जून से शुरू करेगा। पैकेज में महिलाओं का अंडर-19 टी20 विश्व कप भी शामिल है। बीसीसीआई भारतीय क्रिकेट बोर्ड के विपरीत आईसीसी पारंपरिक सीलबंद प्रक्रिया अपनाएगा जिसमें पुरुष और महिला मैचों के लिए अलग-अलग बोली लगाई जाएगी। भारतीय बोर्ड ने तीन दिन ई-नीलामी के जरिए इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) मीडिया अधिकार रिकार्ड 48,390 करोड़ रुपए में बेचे।

आईसीसी ने पुरुषों और महिलाओं के लिए तीन विशेष पैकेज निकाले हैं, जिसमें दोनों के लिए पैकेज ए में टीवी अधिकार, रखा गया है। पुरुषों के वर्ग में 4 और 8 साल के लिए अधिकार हासिल किए जा सकते हैं। महिलाओं के लिए केवल चार



बी में डिजिटल अधिकार और सी में टीवी और डिजिटल दोनों को साल के समय के अधिकार हासिल किए जा सकते हैं।

## 44वें शतरंज ओलंपियाड की 'ऐतिहासिक' मशाल रिले की शुरुआत करेंगे पीएम मोदी

नई दिल्ली । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 19 जून रविवार शाम राजधानी दिल्ली के इंदिरा गांधी स्टेडियम में 44वें शतरंज ओलंपियाड के लिए ऐतिहासिक मशाल रिले की शुरुआत करेंगे। इस मौके पर प्रधानमंत्री उपस्थित लोगों को संबोधित भी करेंगे। इस वर्ष पहली बार अंतरराष्ट्रीय शतरंज महासंघ (फिडे) ने शतरंज ओलंपियाड की मशाल रिले की शुरुआत की है जो कि ओलंपिक परंपरा का हिस्सा है और जिसे शतरंज ओलंपियाड में अब तक कभी शामिल नहीं किया गया था।

पीएमओ ने कहा कि शतरंज के साथ भारत के रिश्ते को और नई ऊंचाइयों पर ले जाने के

उद्देश्य से शतरंज ओलंपियाड के लिए मशाल रिले की यह परंपरा गुजरेगी। फिडे के अध्यक्ष अर्कडी ड्वोरकोविच इस मशाल को



अब हमेशा भारत से शुरू होगी और मेजबान देश तक पहुंचने से पहले सभी महाद्वीपों से होकर प्रधानमंत्री को सौंपेंगे, जिसे प्रधानमंत्री आगे ग्रैंडमास्टर विश्वनाथन आनंद को सौंपेंगे। इस

## फीडे कैडिडेट्स शतरंज - नेपोमिन्सी और कारूआना की जीत से शुरुआत

मेड्रिड स्पेन । फीडे कैडिडेट शतरंज के पहले ही राउंड में रोमांचक मुकाबले देखने को मिले और चार में से दो मुकाबलों में परिणाम निकले जबकि दो बाजियों अनिर्णीत रही। पहले दिन रूस के यान नेपोमिन्सी और यूएसए के फबियानो कारूआना जीत दर्ज कर शुरुआती बढ़त हासिल करने में कामयाब रहे। सबसे पहली जीत दर्ज की नेपोमिन्सी ने, उन्होंने काले मोहरो से खेलते हुए टॉप सीड चीन के डिंग लीरें को इंग्लिश ओपनिंग में 32 चालों में पराजित किया इसके बाद बारी थी कारूआना की जिन्होंने हमवतन हिकार नाकामुरा को सफेद मोहरो से खेलते हुए राय लोपेज एक्सचेंज वेरिएशन में 50 चालों में पराजित किया। अन्य दो

मुकाबलों में पोलैंड के यान डूझा 8 खिलाड़ियों के बीच दोहरे राउंड में हंगरी के रिचर्ड रापोर्ट से तो रॉबिन आधर पर कुल 14 राउंड



अजरबैजान के तैमूर रद्जाबोव ने के इस टूर्नामेंट का विजेता विश्व फ्रांस के अलीरेजा फिरोजा से विजेता मेगनस कार्लसन को विश्व बाजी ड्रॉ खेलते हुए अंक बांटा। विजेता की चुनौती देगा।

## Rafael Nadal को विम्बलडन में खेलने की उम्मीद, पैर में दर्द से हैं पीड़ित



मेड्रिड। राफेल नडाल अपने बाएं पैर के दर्द के नए इलाज की बदौलत एक हफ्ते तक 'लंगड्रैय बिना' चल रहे हैं जिससे 22 बार का यह ग्रैंडस्लैम चैम्पियन विम्बलडन में खेलने की कोशिश करेगा। नडाल ने कहा कि मेरी इच्छा विम्बलडन में खेलने की है। उन्होंने कहा कि अगर चीजें उस तरह से नहीं होती हैं जैसा कि मैं चाहता हूँ तो हम देखेंगे कि क्या होता है। लेकिन मैं खुश हूँ। मैं एक हफ्ते तक लंगड्राय बिना चल रहा हूँ। पैर के दर्द से परेशान नडाल ने दो हफ्ते पहले अपना 14वां फ्रेंच ओपन खिताब जीतने के बाद कहा था कि उन्हें नहीं पता कि वह इतनी परेशानी में खेलना जारी रख पाएंगे या नहीं। वह दर्दनिवारक इंजेक्शन लेने के बाद ही रोलॉ गैंग्रैंडस्लैम पूरा खेल पाए थे। लेकिन स्पेन के इस खिलाड़ी ने कहा कि वह फिर से ऐसा नहीं करना चाहते।

## हाले क्वार्टर फाइनल में Daniil Medvedev ने बतिस्ता को हराया



हाले । शीप रैंकिंग वाले दानिल मेदवेदेव ने हाले ओपन टेनिस सेमीफाइनल में रॉबर्टो बतिस्ता को 6.2, 6.4 से हरा दिया। मेदवेदेव ने नौ ब्रेक प्वाइंट बचाते हुए यह मुकाबला जीता। अब उनका सामना जर्मनी के आस्कर ओटो से होगा। मेदवेदेव को हालांकि विम्बलडन में खेलने की अनुमति नहीं होगी क्योंकि यूक्रेन पर हमले के कारण रूस और बेलारूस के खिलाड़ियों पर प्रतिबंध लगा है। ओटो ने कारेन खचानोव को 4.6, 7.6, 6.4 से मात दी। निक किर्गियोस भी पास्को कारेनो बस्ता को 6.4, 6.2 से हराकर सेमीफाइनल में पहुंच गए हैं। उनका सामना हुबर्ट हुरकाज से होगा जिन्होंने फेलिक्स आगर एलियासिसिमे को 7.6, 7.6 से मात दी।

## वेस्टइंडीज को पहली पारी में 162 रन की बढ़त ब्रैथवेट नर्वस-90 का शिकार , बांग्लादेश दूसरी पारी में 50/2 रन

एंटीगुआ। ओपनर फ्रेग ब्रैथवेट (94) और जर्मेन ब्लैकवुड (63) के अर्धशतकों की बदौलत वेस्टइंडीज ने एंटीगुआ टेस्ट मुकाबले में बांग्लादेश पर पहली पारी में 162 रनों की बढ़त बना ली है। उसने पहली पारी में बांग्लादेश के 103 रनों के जवाब में 265 रन बनाए। इतना ही नहीं, स्टंप्स से पहले उसे 50 रन पर दो झटके देते हुए बांग्लादेश को बैकफुट पर धकेल दिया।

मेजबान टीम अभी भी पहली पारी में 112 रन से पिछड़ रही है। दिन का खेल समाप्त होने पर महमदुल हसन जॉय 18 और नजमुल होसेन शान्तो 8 रन बनाकर नाबाद हैं।

दो टेस्ट मुकाबलों की सीरीज के पहले मैच के पहले दिन वेस्टइंडीज ने 94/2 से दिन की शुरुआत की और 134 के स्कोर पर नरूमह बोनर (33) का विकेट गंवाया। चौथे विकेट के लिए फ्रेग ब्रैथवेट (94) और जर्मेन ब्लैकवुड (63) ने अर्धशतकीय साझेदारी निभाई। ब्रैथवेट दुर्भाग्यशाली रहे और अपने शतक से छह रन पहले ही आउट हो गए।

मेहदी हसन ने चटकाए चार विकेट विंडीज के मध्यक्रम को बांग्लादेशी स्पिनर मेहदी हसन मिराज ने निपटाने का काम किया।

निचले क्रम में गुडकेश मोती ने नाबाद 23 रन बनाए। इस तरह वेस्टइंडीज ने अपनी पहली पारी में सभी विकेट खोकर 265 रन बनाए। बांग्लादेश के लिए मेहदी हसन मिराज ने



सबसे ज्यादा 4 विकेट चटकाए। वहीं खालिद अहमद और इबादत होसेन को भी 2-2 विकेट हासिल हुए। जोसेफ ने दिए शुरुआती झटके दूसरी पारी में बांग्लादेश के ओपनर्स ने पहले विकेट के लिए 33 रन जोड़े। इस

साझेदारी को अलजारी जोसेफ ने तमीम इक़बाल को आउट कर तोड़ा, जो 22 रन बनाकर कैच आउट हुए। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये मेहदी हसन मिराज भी महज 2 रन

बनाकर जोसेफ का ही शिकार बने। हालांकि, यहाँ से महमदुल हसन जॉय (18\*) और नजमुल (8\*) ने संभलकर बल्लेबाजी की और अपनी टीम को कोई और झटका नहीं लगने दिया। स्टंप्स तक 20 ओवर में बांग्लादेश का स्कोर 50/2 था।

## राजकोट टी-20आई 82 रन से जीतकर भारत ने सीरीज (2-2) की बराबर

मुंबई। भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच पांच मैचों की टी20 सीरीज का चौथा राजकोट के मैच सौराष्ट्र क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम में खेला गया। दक्षिण अफ्रीका के कप्तान टेम्बा बावुमा ने एक बार फिर से टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी चुनी। टीम इंडिया की शुरुआत खराब रही। रतुराज और श्रेयस सस्ते में सिमट गए। पंत भी चल नहीं पाए। लेकिन हार्दिक पांड्या के बाद दिनेश कार्तिक के अर्धशतक से टीम इंडिया निर्धारित ओवरों में 169 रन बनाने में कामयाब रही। जवाब में दक्षिण अफ्रीका की टीम आवेश खान के आगे टिक नहीं पाई। आवेश ने 4 तो युजी ने 2 विकेट लेकर दक्षिण अफ्रीका को 87 रन पर ही रोक दिया। भारत ने यह मैच 82 रन से जीता। अब सीरीज 2-2 की बराबरी पर आ गई है। पांचवां टी-20 निर्णायक होगा।

भारत (पहली पारी) रतुराज फिर फेल तीसरे टी-20 में अर्धशतक बनाकर क्रिकेट फैस को दांडस बंधाने वाले भारतीय ओपनर रतुराज गायकवाड़ एक बार फिर से बड़ा स्कोर बनाने में फेल हो गए। रतुराज को दूसरी ही ओवर में लुंगी नगिड़ी ने डिक्कोक के हाथों कैच आउट करवाया। रतुराज के बाद श्रेयस अय्यर (4) भी अगली ही ओवर में मार्को जेन्सन की गेंद पर पगबाधा आउट हो गए।

फिर वाइड गेंद का पीछा करते

आउट हुए पंत पंत के लिए यह सीरीज अच्छी नहीं गई है। सीरीज के चौथे मैच में भी वह वाइड गेंद का पीछे करते हुए गलत शांटी लगा बैठे और अपना विकेट गंवा बैठे। लय ढूँढ़ने में लगे पंत ने मैच में 23 गेंदें



में दो चौकों की मदद से 17 रन बनाए। सीरीज में तीन बार वह स्पिनर का शिकार बने हैं। दो बार उन्हें केशव महाराज पवेलियन भेजने में सफल रहे।

हार्दिक पांड्या ने 148 की स्ट्राइक रेट से बनाए रन

टीम इंडिया के लिए सीरीज में हार्दिक पांड्या पॉजीटिव साइन लेकर आए हैं। उनका बल्ला लगातार चल रहा है। राजकोट टी-20 में भी हार्दिक ने तब पारी को संभाला जब 40 रन पर तीन विकेट गिर चुके थे। हार्दिक ने 31 गेंदों में तीन चौके

कर रहे दिनेश कार्तिक ने एक छोरे संभालकर सीरीज का अपना पहला अर्धशतक जमाया। दिनेश ने शुरुआती गेंदों पर नपुतली बल्लेबाजी की लेकिन अंत के ओवरों में तेजतर्रार तरीके से रन बटोरे। वह आखिरी ओवर में प्रिटोरियस की गेंद पर आउट हुए। उन्होंने 26 गेंदों में नौ चौके और दो छकों की मदद से 55 रन बनाए। लेकिन तब तक टीम इंडिया 150 रन के स्कोर को पार कर चुकी थी।

दक्षिण अफ्रीका (दूसरी पारी) भुवी ने बावुमा को लाया बैकफुट पर दक्षिण अफ्रीका की कप्तान टेम्बा बावुमा पारी की शुरुआत से ही बैकफुट पर दिखे। भुवनेश्वर कुमार की सुभावदार गेंदों को वह समझ नहीं पाए। भुवी ने दो बार बावुमा की बाँड़ी पर हिट किया। पहली बार अंगुलियों पर तो दूसरी बार उनका बाऊंसर बावुमा की छाती पर जा लगा। बावुमा इससे उभरे कि एक रन लेने के चक्र में फील्डर का फंका तेज थ्रो उनके हाथ पर लग गया। दर्द से कराह उठे बावुमा को रिटायर हट होना पड़ा।

डिक्कोक, प्रिटोरियस हुए फेल- दक्षिण अफ्रीका के लिए सीरीज में डिक्कोक और प्रिटोरियस अच्छी पारियां खेल रहे थे लेकिन राजकोट टी-20 में इनके बल्ले से ज्यादा रन नहीं निकल पाए। डिक्कोक जहां 13 गेंदों में दो चौकों की मदद से 14 रन बनाकर रन आउट हो गए तो वहीं, ड्वेन प्रिटोरियस को आवेश खान ने शून्य पर पंत के हाथों कैच

आउट करवाया। चहल और हर्षल ने निकाले क्लासेन-मिलर के विकेट-दक्षिण अफ्रीका की टीम भारतीय गेंदबाजों के आगे दबाव में आ गई। इसी दबाव का फायदा उठाते हुए युजी चहल ने हेनरिक क्लासेन को 8 रन पर बोलड कर दिया। इसके बाद तेज गेंदबाज हर्षल पटेल ने भी डेविड मिलर को बोलड कर दक्षिण अफ्रीका की बची उम्मीदें भी तोड़ दीं।

आवेश की गेंद जेन्सन के हेल्मेट पर लगी टीम इंडिया के लिए आवेश खान का फंका गया 14वां ओवर खास रहा। आवेश ने खरतनाक नजर आ रहे वेन दूसें को 20 रन पर पवेलियन का रास्ता दिखाया। इसके बाद उनकी एक गेंद मार्को जेन्सन के हेल्मेट पर जा लगी। गेंद लगने से मार्को सुधबुध खो बैठे। फिजियो ने मैदान पर आकर उनका हाल जाना। इस दौरान टीम इंडिया के प्लेयर भी उनके आसपास दिखे। जेन्सन इस दबाव को झेल नहीं पाए और अगली ही गेंद पर छक्का उड़ाने के चक्र में रतुराज के हाथों लपके गए। आवेश यही नहीं रुके, ओवर की आखिरी गेंद पर उन्होंने महाराज को भी पवेलियन का रास्ता दिखा दिया। आखिर में चहल और अक्षर पटेल ने 1-1 विकेट लेकर साऊथ अफ्रीका की पारी सिमेट दी। अफ्रीकी कप्तान बावुमा चोट लगने के कारण दोबारा बल्लेबाजी नहीं कर करने आए।

## नंबर एक बनने की चाह में नीदरलैंड से भिड़ेगा भारत



रोटडर्म। ओलंपिक चैम्पियन बेल्जियम के खिलाफ पिछले हफ्ते शानदार प्रदर्शन के बाद भारतीय पुरुष हॉकी टीम एफआईएच हॉकी प्रो लीग 2021/22 के अपने अंतिम दो मैचों में टेबल-टॉपर नीदरलैंड का सामना करेगी। नीदरलैंड के रॉटरडैम में इस हफ्ते के अंत में होने वाले डबल-हेडर मुकाबलों से पहले भारत के कप्तान अमित रोहिदास ने कहा कि टीम हॉकी लीग को जीत के साथ समाप्त करना चाहती है। रोहिदास ने कहा- यह हमारे एफआईएच हॉकी प्रो लीग 21/22 अभियान के अंतिम दो मैच होंगे और निश्चित रूप से टीम जीत के साथ अपना अभियान समाप्त करना चाहती है। इन मैचों को खेलना, साल की शुरुआत में दक्षिण अफ्रीका की यात्रा करना, फिर घरेलू मुकाबले खेलना और अब यूरोप में खचाखच भरे स्टेडियम के सामने खेलना एक शानदार अनुभव रहा। लीग ने हमें शीप टीमों के बारे में अच्छी जानकारी दी है। एक इकाई के रूप में हमें कैसे सुधार करना चाहिए, यह हमारे लिए एक बड़ी सीख रही है।

भारत वर्तमान में प्ले स्टैंडिंग में 29 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर है जबकि नीदरलैंड 31 अंकों के साथ पहले स्थान पर है और उसे अभी चार मैच खेलने हैं। दूसरे स्थान पर 31 अंकों के साथ मौजूद बेल्जियम को भी इस सप्ताह के अंत में इंग्लैंड के खिलाफ दो मैच खेलने हैं। भारतीय टीम के उपकप्तान हरमनप्रीत सिंह ने अंक तालिका में अपना स्थान बेहतर करने के लिये जीत के महत्व पर कहा कि हमें इस हफ्ते के अंत में दोनों मैच जीतने हैं। इसपर कोई दोगरा नहीं है।



## किसानों के तानों के बाद कार्यक्रम स्थल से भागे श्रीलंका के कृषि मंत्री

कोलंबो: देश के दक्षिणी प्रांत के हंबन्टोटा जिले के तिसामहारामा में कृषि संबंधी एक कार्यक्रम में पहुंचे श्रीलंका के कृषि मंत्री महिदा अमरवीरा के दौर का किसानों के एक समूह ने विरोध किया और उनपर जमकर तंज करे, जिसके बाद मंत्री को परिसर छोड़कर जाने पर मजबूर होना पड़ा। वेब पोर्टल के मुताबिक, अमरवीरा ने कृषि संबंधी एक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए तिसामहारामा सभागीय सचिवालय का दौरा किया।

उनके आगमन पर नाराज स्थानीय लोगों का एक समूह स्थानीय सरकारी निकाय के सामने एकत्र हुआ और विरोध प्रदर्शन किया। समूह में ज्यादातर किसान शामिल थे। खबर में कहा गया है कि जब मंत्री ने पृष्ठताछ करने का प्रयास किया तो हंगामा मच गया और मंत्री को परिसर से भागना पड़ा। श्रीलंका की आर्थिक मंदी ने कृषि क्षेत्र पर गंभीर असर डाला है। राष्ट्रपति गोटाबाया राजपक्षे द्वारा अप्रैल 2021 में रासायनिक उर्वरकों के उपयोग पर लगाए गए पूर्ण प्रतिबंध से देश में चावल का उत्पादन काफी प्रभावित हुआ है। प्रधानमंत्री रानिल विक्रमसिंघे ने कहा है कि इस साल सितंबर तक, देश की 2.2 करोड़ आबादी में से लगभग 40-50 लाख लोग भोजन की कमी से सीधे प्रभावित हो सकते हैं। गे श्रीलंका के कृषि मंत्री

उनके आगमन पर नाराज स्थानीय लोगों का एक समूह स्थानीय सरकारी निकाय के सामने एकत्र हुआ और विरोध प्रदर्शन किया। समूह में ज्यादातर किसान शामिल थे। खबर में कहा गया है कि जब मंत्री ने पृष्ठताछ करने का प्रयास किया तो हंगामा मच गया और मंत्री को परिसर से भागना पड़ा। श्रीलंका की आर्थिक मंदी ने कृषि क्षेत्र पर गंभीर असर डाला है। राष्ट्रपति गोटाबाया राजपक्षे द्वारा अप्रैल 2021 में रासायनिक उर्वरकों के उपयोग पर लगाए गए पूर्ण प्रतिबंध से देश में चावल का उत्पादन काफी प्रभावित हुआ है। प्रधानमंत्री रानिल विक्रमसिंघे ने कहा है कि इस साल सितंबर तक, देश की 2.2 करोड़ आबादी में से लगभग 40-50 लाख लोग भोजन की कमी से सीधे प्रभावित हो सकते हैं। गे श्रीलंका के कृषि मंत्री

## भारतीय दूतावास के योग कार्यक्रम में उमड़े चीनी नागरिक

बीजिंग: बड़ी संख्या में चीनी योग प्रेमियों ने 21 जून को मनाए जाने वाले अंतरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह से पहले शनिवार को यहां भारतीय दूतावास द्वारा आयोजित एक योग कार्यक्रम में हिस्सा लिया। वर्ष 2014 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के प्रस्ताव को मंजूरी दिए जाने के बाद आमतौर पर चीन में यह दिवस उत्साह के साथ मनाया जाता है। चीन में भारतीय राजदूत प्रदीप कुमार रावत और उपराजदूत डॉ. एकिनो विमल ने यहां इंडिया हाउस में आयोजित योग कार्यक्रम में हिस्सा लिया। भारतीय दूतावास ने एक टवीट में



कहा, 'मैं' को 'हम' और 'हम' को 'विश्व' से जोड़कर, बीजिंग के योग उस्ताही आज सुबह योग की आम चेतना को जगाने के लिए एक साथ आए। रावत ने महामारी के युग में योग की अनिवार्यता के बारे में बोलते हुए कहा, 'कोविड 'टाइम किलर' है और योग 'कोविड किलर' है।' उन्होंने इस वर्ष के अंतरराष्ट्रीय योग दिवस से पहले दूतावास द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के साथ-साथ डिजिटल अभियानों के बारे में भी बताया जिसमें आसन श्रृंखला, फोटो और वीडियो प्रतियोगिताएं शामिल हैं। श्यांग्जु और हंगकांग में भारतीय वाणिज्य दूतावासों के अलावा चीन के 75 योग स्कूल भी यहां इंडिया हाउस में आयोजित शनिवार के कार्यक्रम से जुड़े। शनिवार के कार्यक्रम का एक विशेष आकर्षण 'ड्रीम योग' की स्टेनलेस स्टील की मूर्ति थी, जिसे बीजिंग निवासी भारतीय कलाकार गुरजिंदर कौर द्वारा तैयार किया गया है। विभिन्न योग विद्यालयों के कई चीनी योग शिक्षकों ने घंटे भर के योग सत्र में भाग लिया।

## चीन के गुआंगशी में बारिश के कारण इमारत ढहने से 5 लोगों की मौत

बीजिंग: चीन के गुआंगशी झुआंग स्वायत्त क्षेत्र में भारी बारिश के कारण इमारत ढहने से पांच लोगों की मौत हो गई है। स्थानीय अधिकारियों ने इसकी पुष्टि की है। स्थानीय मौसम विभाग ने बताया कि लिउझोउ शहर के रोंगशुई मियाओ स्वायत्त काउंटी और रोंगन काउंटी में मूसलाधार बारिश हुई। कुछ क्षेत्रों में 385.6 मिमी तक बारिश हुई। रोंगशुई काउंटी के गुडू गांव में एक लकड़ी की इमारत ढहने के बाद से पांच लोग लापता थे। स्थानीय आपातकालीन प्रबंधन, प्राकृतिक संसाधन, अग्निशमन और स्वास्थ्य विभागों से 100 से अधिक लोगों दल को बचाव कार्यों के लिए भेजा गया था।

## दोनेत्स्क में गोलीबारी, पांच की मौत, 20 घायल

कीव: यूक्रेन में रूस के विशेष सैन्य अभियान के बीच रूसी समर्थित दोनेत्स्क पीपुल्स रिपब्लिक के दोनेत्स्क शहर में शनिवार को हुई गोलीबारी से पांच लोगों की मौत हो गई। गोलीबारी में 20 अन्य लोगों घायल होने की भी सूचना है। डोनबास में युद्धविराम व्यवस्था नियंत्रण और समन्वय के संयुक्त केंद्र ने रविवार को यह जानकारी दी। दोनेत्स्क रिपब्लिक मिशन ने अपने टेलीग्राम चैनल पर कहा- '18 जून, 2022 को यूक्रेनी सशस्त्र बलों के हमलों में पीड़ित नागरिकों की कुल संख्या 25 (पांच मृत और 20 घायल) है।' इससे पहले कहा गया था कि गोलीबारी में घायलों की संख्या 15 है। उल्लेखनीय है कि 24 फरवरी से यूक्रेन और रूस की सेना आमने-सामने हैं।

## अखंड भारत संदेश

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक  
स्वामी श्री योगी सत्यम एवम्  
योग सत्संग समिति द्वारा  
विपिन इण्टरप्राइजेज  
1/6C माधव कुंज  
कटरा प्रयागराज  
से मुद्रित एवम् क्रियायोग  
आश्रम अनुसंधान संस्थान  
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश  
211019 से प्रकाशित।  
Title UPHIN 29506  
Email:-  
akhandbharatsandesh1@gmail.com  
इस समाचार पत्र में प्रकाशित  
समस्त समाचारों से सम्बंधित  
विवादों का न्याय क्षेत्र  
कौशांबी, प्रयागराज होगा।

## टीटीपी और पाकिस्तान सरकार के बीच हुआ संघर्ष विराम समझौता

कराची/काबुल: पाकिस्तान सरकार और प्रतिबंधित संगठन तहरीक-ए-तालिबान (टीटीपी) के बीच अनिश्चितकालीन संघर्ष विराम समझौता सकुशल संपन्न हो चुका है। अफगान तालिबान ने इस बात की पुष्टि की है। अफगान तालिबान के प्रवक्ता जैबुल्लाह मुजाहिद ने पाकिस्तानी पत्रकारों से कहा कि मेरा मानना है कि दोनों पक्षों ने इस बात का ध्यान रखा कि शांति की ओर आगे बढ़ना दोनों के हित में है। तालिबान प्रवक्ता मुजाहिद ने शनिवार को कहा कि युद्ध और हिंसा से न केवल मानवीय, सामाजिक और आर्थिक हानि होती है बल्कि इससे अंतरराष्ट्रीय समुदाय को भी हस्तक्षेप करने का अवसर मिलता है।

## नाइजीरिया में लासा बुखार से अब तक 155 लोगों की मौत

अबुजा: वैश्विक महामारी कोविड के बीच नाइजीरिया में लासा बुखार से मरने वालों की संख्या बढ़कर 155 हो गई है। नाइजीरिया सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल (एनसीडीसी) के अनुसार इस साल की शुरुआत से 4,939 संदिग्ध मामलों के साथ बीमारी के 782 मामलों की पुष्टि हुई है। एनसीडीसी ने कहा कि इस बुखार से जून की शुरुआत तक 155 मौत दर्ज की गई हैं। 24 राज्यों में कम से कम एक मामला दर्ज किया गया है। इस साल तीन प्रांतों ओडो, ईदो और बाउची में बीमारी के 68 प्रतिशत मामले सामने आए हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, लासा बुखार एक तेजी से फैलने वाली वायरल रक्तस्रावी बीमारी है। लासा का संबंध परिनावायरस से होता है। बुखार के लक्षण

## बांग्लादेश में बाढ़ से 60 लाख लोग प्रभावित, मदद के लिए बुलाई सेना



हाका। बांग्लादेश में हो रही अनवरत बारिश और बाढ़ से 60 लाख लोग प्रभावित हैं। इस प्राकृतिक आपदा के मद्देनजर देश ने सहायता, राहत एवं बचाव कार्य के लिए सेना को मदद के लिए बुलाया है। आधिकारिक अनुमान के अनुसार, मकानों में पानी घुस जाने के कारण करीब 60 लाख लोग बाढ़ से प्रभावित हैं और देश के उत्तरी-पूर्वी और उत्तरी क्षेत्र की नदियों में जलस्तर लगातार बढ़ने के कारण कई लोग अस्थाई शिविरों में रुके हुए हैं। बाढ़ पूर्वानुमान और चेतावनी केन्द्र के प्रवक्ता ने कहा, 'देश की चार प्रमुख नदियों में से दो नदियों में जलस्तर खतरे के निशान से बहुत ऊपर है और हालात लगभग 2004 के बाढ़ जैसे हैं।' कई लोगों को सुनामगंज में पानी भरने के बाद छतों पर शरण लेना पड़ा था, हालांकि बाद में नावों की मदद से उन्हें बाहर निकाला गया। बाढ़ के कारण कितने लोगों की मौत हुई है इस संबंध में अभी तक कोई आधिकारिक आंकड़ा उपलब्ध नहीं है। अनाधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, देश में कम से कम 19 लोगों की मौत हुई है। EFWC ने मेघालय और बांग्लादेश के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में लगातार हो रही बारिश को इस बाढ़ का कारण बताया है। बाढ़ का पानी कई बिजली घरों में भर गया है जिसके कारण प्रशासन को इन बिजली घरों को बंद करना पड़ा है जिसके कारण इंटरनेट और मोबाइल फोन संवाद बंद हो गए हैं। इससे पहले बांग्लादेश ने सेना को प्रशासन की मदद के लिए बुलाया है।



## 2 हफ्ते से भूखी 20 बिल्लियों ने घर में घुसते ही मालकिन की ले ली जान

दुनिया भर में बहुत ही लोकप्रिय होने की सूचना पुलिस को दी थी, जिसमें कहा गया कि वह अपने बॉस से संपर्क नहीं कर पा रही है। इसके बाद तलाशी अभियान

मास्को। इंसान हो या जानवर भूख हरेक को हिंसक बना देती है जिसके कई बार बेहद भयानक परिणाम निकलते हैं। ऐसा ही एक दिल दहलाने वाला मामला रूस में सामने आया है। रूस में करीब 20 बिल्लियों ने एक महिला को इतना काटा कि उसकी मौत हो गई। घटना रूस के रोस्तोव क्षेत्र के बटायस्क इलाके की है। पुलिस अधिकारियों को उसकी डेडबॉडी दो हफ्ते के बाद मिली, जिसके कुछ ही हिस्से शेष बच्चे थे। यह देखकर पुलिसकर्मी भी हैरान रह गए। एनिमल रेस्क्यू एक्सपर्ट ने बताया, 'बिल्लियों को दो सप्ताह के लिए घर में अकेला छोड़ दिया गया था, उनके खाने के लिए कुछ भी नहीं था। बिल्लियां बहुत ज्यादा भूखी थीं। इस स्थिति को समझा जा सकता है। बिल्लियों ने वही भूख जो उन्हें इतने दिनों बाद मिली।' जिन बिल्लियों के काटने से महिला की मौत हुई, वो



सूची में ये नस्ल तीसरे नंबर पर आती है। आमतौर पर इनका व्यवहार बहुत ही सौम्य रहता है। एक्सपर्ट्स का मानना है कि एक भूख की वजह से इन बिल्लियों ने यह हिंसक बर्ताव किया। महिला के एक सहकर्मी ने उसके लापता चलाया गया। पुलिस को महिला का आंशिक रूप से खाया हुआ शरीर उसके घर के अंदर भूखी बिल्लियों से घिरा हुआ मिला। पुलिस का मानना है कि दो सप्ताह पहले ही महिला की मौत हो गई थी, क्योंकि उसके शव के अवशेष सड़ने लगे थे।

## काबुल में गुरुद्वारे पर हमले के बाद भारत का बड़ा कदम, 100 से ज्यादा सिख-हिंदुओं को ई-वीजा किया जारी

काबुल। अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में कार्तें परवान के गुरुद्वारे पर हमले के बाद अफगान सिखों की शरण की गुहार के बाद भारत ने बड़ा कदम उठाया है। गुरुद्वारे पर हमले के बाद से ही भारत का विदेश मंत्रालय करीब से नजर रखे हुए है। गृह मंत्रालय ने अफगानिस्तान में 100 से अधिक सिखों और हिंदुओं को प्राथमिकता के आधार पर ई-वीजा प्रदान किया है। सूत्रों के अनुसार काबुल हमले के बाद गृह मंत्रालय ने अफगानिस्तान में 100 से अधिक सिखों और हिंदुओं को प्राथमिकता के आधार पर ई-वीजा प्रदान किया है।



भारत सरकार की ओर से जारी किए गए ई-वीजा को ऑनलाइन आवेदन के जरिए भी हासिल किया जा सकता है। इससे पहले गृह मंत्रालय की तरफ से पिछले साल 15 अप्रैल को किया गया था। बता दें कि हुए इस हमले में एक सिख सहित दो लोगों की मौत हो गई और सात अन्य घायल हो गए। यह हमला तब हुआ जब बंदूकधारियों ने एक हथगोला फेंका जिससे गुरुद्वारे के गेट के पास आग लग गई। हालांकि अफगान सुरक्षाकर्मियों ने

गुरुद्वारे पर हमले की खबरों से बहुत चिंतित हैं। विदेश मंत्री सुब्रमण्यम जयशंकर ने कहा है कि गुरुद्वारा कार्तें परवान पर हुए कायरतापूर्ण हमले की सभी को कड़े शब्दों में निंदा करनी चाहिए। हमले की खबर मिलने के बाद से हम घटनाक्रम पर करीब से नजर रख रहे हैं। हमारी पहली और सबसे महत्वपूर्ण चिंता समुदाय के कल्याण के लिए है। गौरतलब है कि काबुल के एक गुरुद्वारे में मार्च 2020 में हुए आत्मघाती हमले में कम से कम 25 सिख मारे गए थे और आठ अन्य लोग घायल हुए थे। यह हमला अफगानिस्तान में अल्पसंख्यक सिख समुदाय पर हुए सबसे घातक हमलों में से एक था। शीर बाजार इलाके में हुए इस हमले की जिम्मेदारी आतंकी समूह इस्लामिक स्टेट ने ली थी।

विस्फोटक लदे एक गाड़ी को गुरुद्वारे में एंट्री करने से रोककर एक अन्य बड़ी घटना को टाल दिया। भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने हमले के बाद कहा कि काबुल में

## पाकिस्तान में गंभीर रोग के कारण 300 से अधिक गायों की मृत्यु, सैकड़ों पीड़ित

पेशावर: पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में फोडेदार चर्म रोग से पीड़ित 300 से अधिक गायों की मृत्यु हो गई है जबकि सैकड़ों गाय इससे पीड़ित हैं। फोडेदार चर्म रोग एक वायरल रोग है, जो मवेशियों को प्रभावित करता है। यह रक्त चूसने वाले कीड़ों जैसे मक्खियों और मच्छरों आदि की कुछ प्रजातियों से फैलता है। इसके कारण बुखार होता है एवं त्वचा पर फोड़े हो जाते हैं। इसमें विशेष रूप से उन पशुओं की मृत्यु हो सकती है, जिन्हें पहले कभी यह संक्रमण नहीं हुआ है। इसे फैलने से रोकने के लिये टीकाकरण और संक्रमित पशुओं को मारने का विकल्प शामिल है। लाहौर से करीब 300 किलोमीटर दूर बहावलनगर के किसानों के अनुसार लगभग तीन सप्ताह पहले उनके मवेशी इस रोग से संक्रमित होने लगे थे। किसानों ने कहा कि उन्होंने जिला प्रशासन



व पशुधन विभाग से संपर्क किया, लेकिन उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। एक किसान खालिद हसनैन ने कहा, 'निजी पशु चिकित्सकों ने रोगी मवेशियों का उपचार किया, लेकिन वे जीवित नहीं रह सके। तीन सप्ताह में 300 से अधिक गायों की मृत्यु हो गई।' उन्होंने कहा कि यह बीमारी अभी भी क्षेत्र में फैल रही है। किसान ने तत्काल कदम नहीं उठाते हैं, तो बड़ी संख्या में मवेशी इस बीमारी से मारे जा सकते हैं।' उन्होंने कहा कि सरकार को इस मामले पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

## साइकिल चलाते अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन का पैडल में फंस गया पैर, गिरे धड़ाम

न्यूयार्क: साइकिलिंग पर निकले अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन डेलावेयर में अपने बीच हाउस के पास साइकिल से गिर गए। वह केप हेनलोपेन स्टेट पार्क के पास साइकिल से उतरने की कोशिश के दौरान गिर पड़े। हालांकि, बाइडेन का कहना है कि उन्हें कोई चोट नहीं आई है। 79 वर्षीय राष्ट्रपति बाइडेन और उनकी पत्नी जिल बाइडेन सुबह साइकिल पर



घूमने निकले थे और अपने शुभचिंतकों से मिलने के लिए आगे बढ़ रहे थे। हेलमेट पहने हुए बाइडेन साइकिल से उतरने का प्रयास करते हुए नीचे गिर पड़े। दाईं ओर गिरने के बाद संभलते हुए बाइडेन तुरंत खड़े हो गए। घटना के तुरंत बाद अमेरिका स्पोर्ट्स सर्विस एजेंट्स ने राष्ट्रपति को उठाने में मदद की। इसके तुरंत बाद बाइडेन ने कहा, 'मैं ठीक हूँ। बस मेरा पैर फंस गया था। मुझे किसी तरह की चोट नहीं लगी है।'

## जयशंकर बोले- पाकिस्तान के साथ हमारी समस्याओं का एक कारण अमेरिका का समर्थन

वाशिंगटन। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि जब तक लड़ाकू समेत अन्य मुद्दे हल नहीं हो जाते तब तक चीन के साथ रिश्ते पूरी तरह से सामान्य होने में वक्त लगेगा। इसी बीच विदेश मंत्री ने कहा कि भारत लगातार इस बात पर कायम रहा है कि एलएसी पर शांति बनी रहे। साथ ही द्विपक्षीय संबंध भी बरकरार रहे। एक न्यूज चैनल से बात करते हुए विदेश मंत्री ने कहा कि संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ भारत का इतिहास परेशान करने वाला रहा है। पाकिस्तान के साथ हमारी बहुत सारी समस्याएं सीधे तौर पर उस समर्थन के कारण हैं जो संयुक्त राज्य अमेरिका ने पाकिस्तान को दिया। लेकिन आज अमेरिका अलग दृष्टिकोण रखने में सक्षम है, जो वास्तव में यह कहता है कि भारत का रूस के साथ अलग इतिहास और संबंध है, जिसे हमें ध्यान में रखना होगा। उन्होंने कहा कि रूस के साथ भारत का इतिहास अमेरिका, जापान या ऑस्ट्रेलिया के साथ

बाद के इतिहास से अलग है। क्राइड में हर किसी की हर चीज पर समान स्थिति नहीं है। LAC पर एकतरफा प्रयास की अनुमति नहीं



है। अगर ऐसा होता है तो हम उम्मीद करते हैं कि पाकिस्तान पर हमारे जैसा ही रुख होना चाहिए। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने शनिवार को कहा कि भारत चीन द्वारा यथास्थिति या वास्तविक नियंत्रण रेखा को बदलने के

किसी भी एकतरफा प्रयास की अनुमति नहीं देगा। पूर्वी लड़ाकू सीमा विवाद पर बातचीत करते हुए जयशंकर ने कहा कि चीन ने 1993 और 1996 के समझौते का उल्लंघन करते हुए सीमा पर बड़ी तादाद में सैन्य तैनाती की। उन्होंने कहा कि उसका प्रयास स्पष्ट रूप से LAC को एकतरफा रूप से बदलने का था। जयशंकर ने एक टीवी चैनल से बातचीत में कहा, 'भले ही हम उस समय कोविड-19 के दौर से गुजर रहे थे, लेकिन एक व्यापक संगठनात्मक व नियोजित प्रयास के माध्यम से, हम वास्तव में रूढ़ पर उनका मुकाबला करने में सक्षम थे, जिसके बारे में मुझे लगता है कि कभी-कभी लोगों द्वारा, विश्लेषकों द्वारा, यहां तक कि इस देश में हमारी राजनीति में भी पर्याप्त रूप से इसे मान्यता नहीं दी गई है। विवाद के बारे में विस्तार से बताते हुए उन्होंने कहा कि कुछ लोगों के पास अंतरराष्ट्रीय सीमा के बारे में सामान्य विचार होते हैं।

यूरोप और अमेरिका समेत दुनिया के कई देश मंत्रीगणों के कहर से जुझ रहे हैं। अमेरिकी एजेंसी सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन (सीडीसी) ने सेक्स को लेकर अजीबोगरीब गाइडलाइन जारी की है। इसमें बुखार, थकान, कमजोरी और सिरदर्द जैसी शिकायत होती है। रोकथाम के लिए गाइडलाइन जारी